तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 9, अंक- 6-7, मई-जून 2021, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा डिजिटलाइजेशन की दिशा में बढ़ते कदम

ईश वंदना

विनती सुन लो हे भगवान, शत-शत है तुझको प्रणाम।
ईसा मसीह कहें खुदा या राम, एक है तू तेरे लाखों नाम।

सत्य पथ के राही बनें हम, झूठ से करें किनारा।
दिल में प्रीत की जोत जला दो, कर दो दूर अँधियारा।
बस ज्ञान का प्रकाश हो।
हम सभी बच्चे नादान, माँगे सद्बुद्धि का दान।
विनती सुन लो हे भगवान..

देश सेवा धर्म समझकर, अपना धर्म निभाएँ।
कर्म पथ पर यूँ चलें, सबके दिल में बस जाएँ।
हर जुबाँ पे तेरा नाम हो।
तुम्हीं हो बाइबल, तुम ही कुरान, तुम ही हो गीता का ज्ञान।
विनती सुन लो हे भगवान..

हर चेहरा मुस्कान लिए हो, जग में न कोई रोए।
सबको देना मेरे मालिक, भूखा न कोई सोए।
सबका ही कल्याण हो।
दया करो हे दया निधान, समझो हम सबके अरमान।
विनती सुन लो हे भगवान..

संजीव शर्मा
हिंदी अध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खटौली
जिला- पंचकूला, हरियाणा

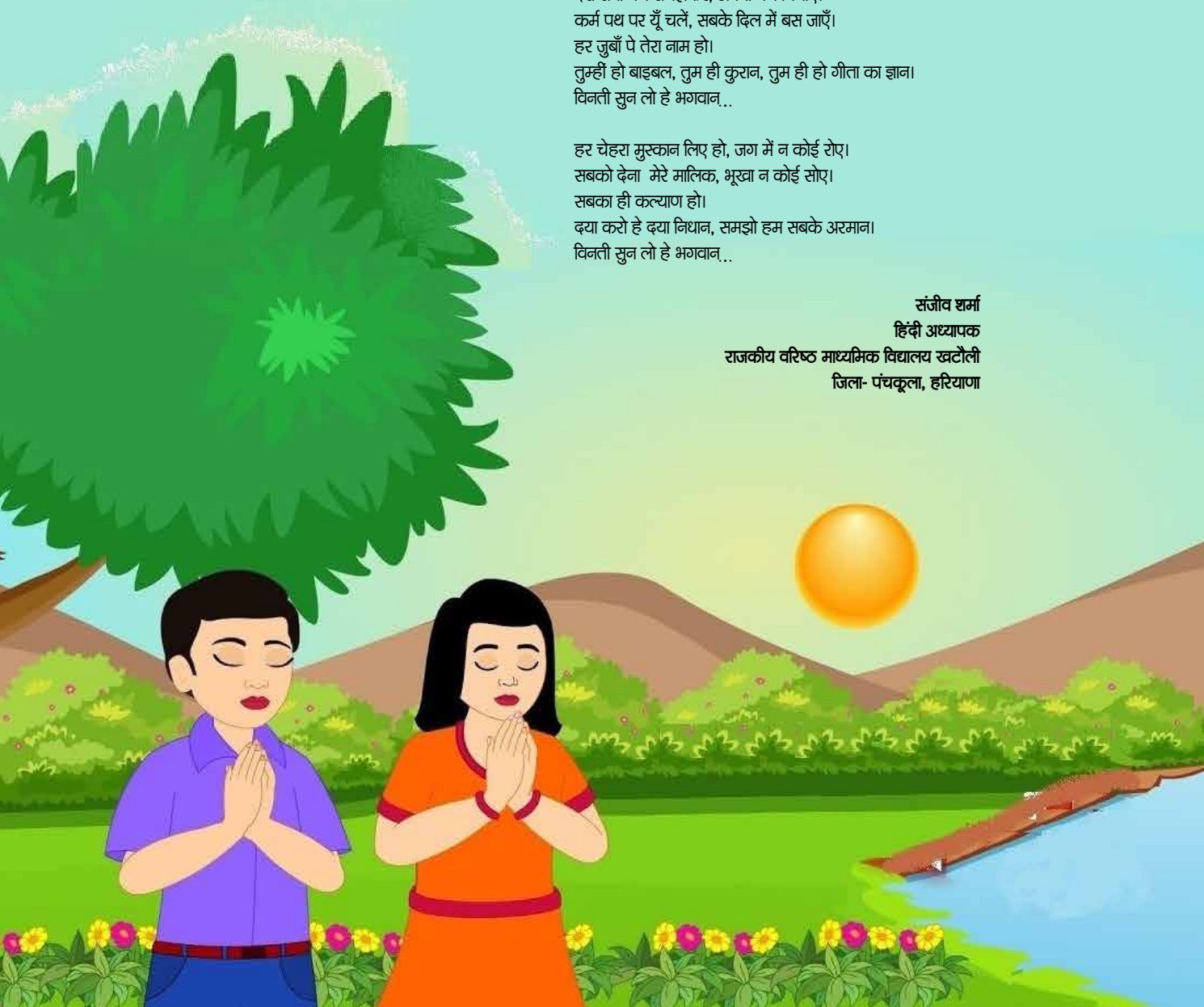

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

मई-जून 2021

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
कँवर पाल
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
नितिन कुमार यादव
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

डॉ. जे. गणेशन
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

सम्वर्तक सिंह
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"लगातार पवित्र विचार करते रहें, बुरे संस्कारों को दबाने के लिए एकमात्र समाधान यही है।

- विद्यालयों को स्मार्ट क्लासरूम का तोहफा 5
- स्मार्ट शिक्षण से प्रदेश के विद्यार्थी बन रहे स्मार्ट 6
- संस्कृति प्राथमिक विद्यालय : ज्ञान, कौशल एवं राष्ट्र-निर्माण के केन्द्र 9
- 'फेस लिफ्टिंग' से दमक उठा स्कूलों का चेहरा 14
- सुनहरे सपनों को नई उड़ान देता उम्मीद पोर्टल 16
- क्रिटिकल एंड क्रिएटिव थिंकिंग 20
- एक जीवंत विद्यालय : रावमावि कापड़ीवास 24
- प्राध्यापक चावला होंगे सम्मानित 25
- भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती है छात्रा ईशा 25
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- क्रियाकलाप आधारित विज्ञान-शिक्षण की महत्ता 30
- शपथ 31
- हमें बचाना है 31
- Turn your Negatives into Positives 32
- The Raven's Spring Song 33
- Meh-Teh 34
- Compendium of Academic Courses After +2 38
- Ten steps to transform the quality of education.. 44
- Drive off Corona 47
- Amazing Facts 48
- General Quiz 49
- आपके पत्र 50

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

'स्मार्ट' होता शिक्षा-तंत्र

हर्ष का विषय है कि प्रदेश सरकार जिन पाँच 'एस' (शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, स्वावलंबन और स्वाभिमान) पर विशेष बल दे रही है, शिक्षा भी उनमें से एक है। प्रदेश के विद्यालयों में स्मार्ट कक्षा-कक्ष बनाने का कार्य सुभीते से चल रहा है। स्मार्ट कक्षाएँ भारतीय शिक्षा परिदृश्य में शिक्षा का एक आधुनिक तरीका हैं जो विद्यार्थियों की बेहतर अवधारणा निर्माण, अवधारणा विस्तार, पढ़ने के कौशल में सुधार और शैक्षणिक उपलब्धि में मदद करके उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करती हैं। स्मार्ट क्लास-रूमों में साधारण श्यामपट्ट के स्थान पर टच स्क्रीन युक्त मॉनिटर लगाये जा रहे हैं, जिन पर विशेष प्रकार के पेन से न केवल लिखा जा सकता है, बल्कि ऑडियो-वीडियो सामग्री भी सर्च की जा सकती है, देखी व शेयर की जा सकती है। एक प्रकार से देखा जाए तो विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा प्रधानमंत्री महोदय के 'डिजिटल इंडिया' के सपने को साकार करने की दिशा में कदम बढ़ा रहा है।

मॉडल संस्कृति विद्यालयों की स्थापना शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी बदलाव की ओर संकेत कर रही है। इन विद्यालयों में तमाम सुविधाएँ विद्यार्थियों को उपलब्ध कराई जा रही हैं। इनमें शानदार फर्नीचर, स्मॉक डिटेक्टर, अग्निशमन उपकरण, सीसीटीवी, सौर ऊर्जा पैनल के साथ डिजिटल कक्षा, प्रोजेक्टर, इंटरेक्टिव व्हाइटबोर्ड, एलसीडी, डिजिटल पोडियम, वाई-फाई, बायोमैट्रिक अटेंडेंस के साथ शिल्प स्टूडियो, रोबोटिक्स, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और जीव विज्ञान की सुसज्जित आधुनिक प्रयोगशाएँ और डिजिटल लाइब्रेरी आदि सुविधाएँ शामिल हैं। इनके साथ ही प्रदेश सरकार द्वारा राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को निःशुल्क टेबलेट उपलब्ध कराये जाने की योजना है।

इन सबका उद्देश्य राजकीय विद्यालयों में अध्ययन कर रहे विद्यार्थियों को निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों से शैक्षिक प्रतिस्पर्धा में खड़ा करना व नवीनतम तकनीक के इस्तेमाल से शिक्षण को रोचक बनाना है ताकि विद्यार्थी डिजिटल तकनीक का प्रयोग कर अपनी रचनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमताओं का विकास कर सकें। कोरोना काल में इस तकनीक की उपयोगिता और भी बढ़ गई है। सचमुच, प्रदेश में शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन एक सुखद भविष्य की ओर इंगित कर रहे हैं।

-संपादक

विद्यालयों को स्मार्ट क्लासरूम का तोहफा

डॉ. प्रदीप राठौर

पंचकूला के 17 विद्यालयों को स्मार्ट क्लासरूम का तोहफा मिला है। इनका उद्घाटन बीते दिनों शहर के सैक्टर-6 स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री कँवर पाल ने किया। जिले के 17 विद्यालयों में स्मार्ट क्लासरूम बनाए गए हैं। इस अवसर पर हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता भी मौजूद रहे।

विद्यालय में पधारने पर छात्राओं द्वारा गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया गया। उनके द्वारा स्वागत-गान भी गाया गया। शिक्षा मंत्री कँवरपाल पाल ने कहा कि वह सभी मंत्रियों, विधायकों व जनप्रतिनिधियों को विद्यालयों में योगदान के लिए प्रेरित करेंगे। उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग और विधायक के साथ गाँवों के सरपंच अगर इस कार्य को करेंगे तो इसके परिणाम और अच्छे मिलेंगे। उन्होंने कहा कि शिक्षा विभाग की ओर से 127 करोड़ रुपये की लागत से स्कूलों में स्मार्ट क्लास रूम बनाए जा रहे हैं। स्मार्ट रूम प्रोजेक्ट सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए उपयोगी होगा।

उन्होंने कहा कि भारत विश्वगुरु रहा है। अध्यापक को यहाँ विशिष्ट सम्मान दिया जाता रहा है। आज भी आवश्यकता है कि अध्यापक अपने उस गौरव को पहचानते हुए अपनी अधिकतम क्षमताओं से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दें।

इस मौके पर उनके साथ मौलिक शिक्षा महानिदेशक

नितिन कुमार यादव, संयुक्त निदेशक विजय यादव, मेयर कुलभूषण गोयल और जिले के शिक्षा अधिकारी भी मौजूद थे। जिन अन्य 16 विद्यालयों में स्मार्ट क्लास रूम बनाए गए हैं उनके प्रधानाचार्य भी इस अवसर पर उपस्थित थे।

स्मार्ट क्लास रूम ड्रीम प्रोजेक्ट : विधानसभा अध्यक्ष

विधानसभा अध्यक्ष ज्ञानचंद गुप्ता ने कहा कि स्मार्ट क्लास रूम उनका ड्रीम प्रोजेक्ट है। उन्होंने छह माह पहले पंचकूला विधानसभा क्षेत्र के 17 स्कूलों में स्मार्ट क्लास रूम बनाने का एक सपना संजोया, जो पूरा हो गया। इन सभी स्कूलों में बच्चों को स्वच्छ पानी उपलब्ध करवाने के लिए आरओ के साथ शौचालयों की व्यवस्था की गई है। इस कार्य के लिए 50 लाख रुपये अपने स्वैच्छिक कोष से दिए हैं। उन्होंने कहा कि इस साल एक करोड़ रुपये पंचकूला विधानसभा क्षेत्र में इसी प्रकार के कार्य के लिए और खर्च किए जाएँगे। उन्होंने शिक्षा मंत्री से आह्वान किया कि शिक्षा क्षेत्र में लागू होने वाले प्रोजेक्ट में 20 फीसदी काम स्टार्टअप के लिए आरक्षित किया जाना चाहिए, जिससे युवाओं को और अधिक बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने कहा कि सभी शिक्षा अधिकारियों, अध्यापकों, विधायकों तथा जन-प्रतिनिधियों को भी अपने बच्चों को सरकारी विद्यालयों में प्रवेश दिलाना चाहिए। अगर ऐसा होता है तो निश्चित रूप से सरकारी विद्यालयों की दशा में काफी सुधार आएगा।

कोविडकाल में मिलेगा बच्चों को लाभ

इंफोहाईटेक सॉल्यूशन के कपिल जिंदल ने बताया कि स्मार्ट क्लास रूम प्रोजेक्ट 17 स्कूलों में शुरू किया गया है। कोविड काल में यह अध्यापकों और बच्चों के लिए विशेषतौर पर फायदेमंद रहेगा। इसके माध्यम से अध्यापक अपना लेक्चर स्कूल या घर बैठे बच्चों तक ई-मेल और व्हाट्सएप के माध्यम से भेज सकेंगे। उन्होंने कहा कि स्मार्ट क्लास रूम में पहली से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए सभी विषयों की डिजिटल सामग्री के साथ साथ प्रश्न-बैंक भी उपलब्ध होंगे। उन्होंने कहा कि यदि एक विद्यालय में किसी कारण से अध्यापक मौजूद नहीं है, या पद रिक्त है, तो भी अध्यापक की कमी शिक्षा में बाधा नहीं बनेगी। एक विद्यालय में अध्यापक पढ़ाएगा तो बाकी विद्यालय के विद्यार्थी उसी लेक्चर को सुन पाएँगे।

मौलिक शिक्षा के महानिदेशक श्री नितिन कुमार यादव ने शिक्षा मंत्री को, संयुक्त निदेशक विजय यादव ने विधानसभा अध्यक्ष को व जिला शिक्षा अधिकारी उर्मिल देवी ने मेयर को स्मृति-चिह्न प्रदान किये। धन्यवाद प्रस्ताव विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री रजनीश सचदेवा द्वारा रखा गया। कार्यक्रम का संचालन प्रस्तुत पंक्तियों के लेखक द्वारा किया गया।

drpradeeprathore@gmail.com

स्मार्ट शिक्षण से प्रदेश के विद्यार्थी बन रहे स्मार्ट

क्रियात्मक और संवादात्मक वातावरण बनाने में सहयोगी बने स्मार्ट क्लासरूम

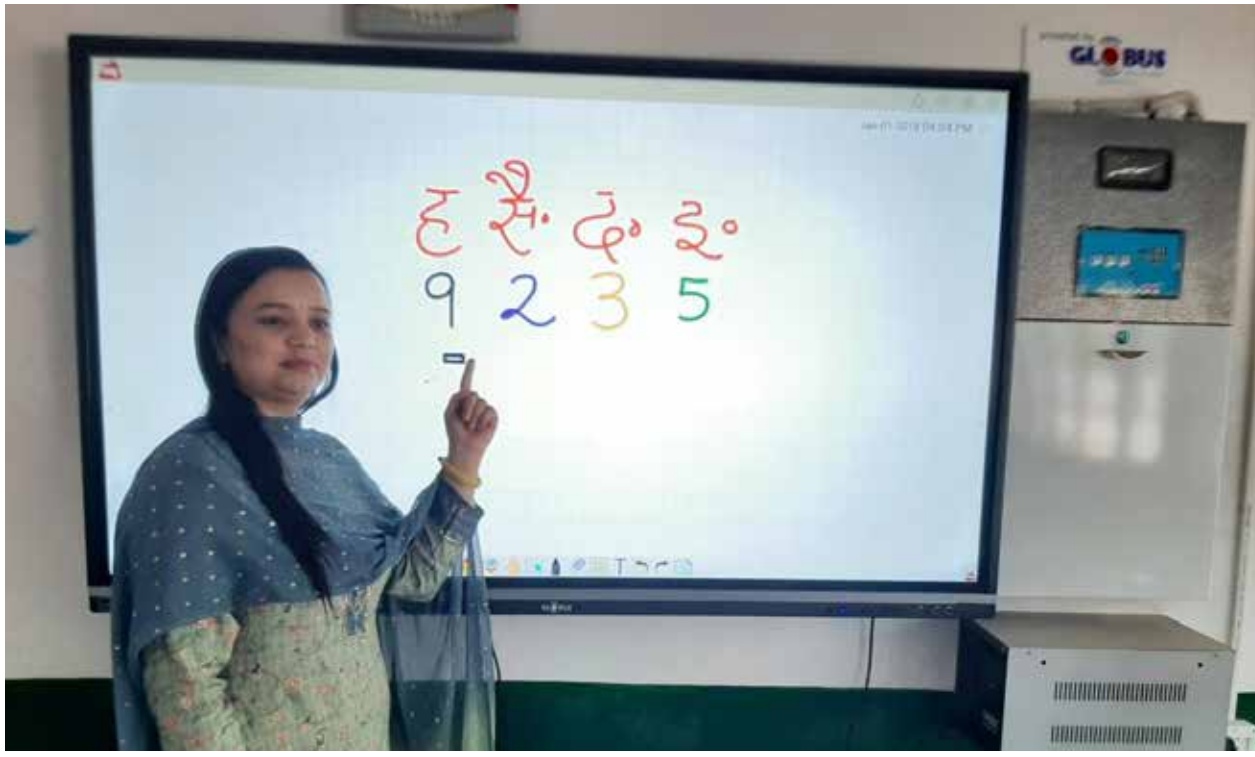

प्रदेश में परंपरागत शिक्षा का ढाँचा बदल रहा है। बच्चे क्रियात्मक और संवादात्मक शिक्षा के माहौल में स्मार्ट बन रहे हैं। स्मार्ट क्लास में एनिमेशन और ऑडियो-विजुअल के रूप में तैयार पाठ्यक्रम ने विद्यालयों को बहुरंगी बनाया, जो कि बच्चों और शिक्षकों दोनों को ही आकर्षित कर रहा है। स्मार्ट क्लास के द्वारा बच्चे चित्र और वीडियो देखकर बहुत कुछ सीख पाते हैं। इस पद्धति ने शिक्षकों को भी पढ़ाने का आसान व डिजिटल मंच प्रदान किया है। साथ ही बच्चे भी इसमें जागरूकता दिखा रहे हैं। अहम पहलू यह है कि स्मार्ट क्लासरूम बच्चों में सीखने की जिज्ञासा पैदा करता है और भविष्य में शिक्षा का बड़ा व प्रभावी माध्यम साबित हो सकता है।

हरियाणा के सरकारी स्कूलों में अब परंपरागत ब्लैक बोर्ड का स्थान स्मार्ट बोर्ड ले रहा है। सरकारी स्कूल भी प्राइवेट स्कूलों की दौड़ में खड़े नज़र आते हैं। विद्यार्थियों को नर्सरी कक्षा से इंग्लिश माध्यम में पढ़ाई

गरीब बच्चों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा स्मार्ट क्लासरूम प्रोजेक्ट-

स्मार्ट क्लासरूम एक अनूठी पहल है जिसके भविष्य में सार्थक परिणाम देखने को मिलेंगे। हालांकि शिक्षा विभाग इस दिशा में अनेक कदम उठा रहा है। शिक्षा विभाग द्वारा 127 करोड़ रुपए की लागत से स्कूलों में स्मार्ट क्लासरूम बनाए जा रहे हैं। स्मार्ट क्लासरूम प्रोजेक्ट सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों, विशेष तौर पर गरीब परिवारों से संबंध रखने वाले बच्चों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होगा। क्योंकि वे बिना किसी अतिरिक्त बोझ के डिजिटल शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे।

सरकार द्वारा निर्णय लिया गया है कि प्रदेश के सरकारी स्कूलों में शिक्षा ग्रहण कर रहे 8 लाख 6 हजार विद्यार्थियों को निःशुल्क टेबलेट उपलब्ध कराए जाएँगे। हरियाणा पहला ऐसा राज्य बनेगा, जहाँ इतनी बड़ी संख्या में विद्यार्थियों को पढ़ाई के लिए निःशुल्क टेबलेट उपलब्ध कराए जाएँगे।

कँवरपाल
शिक्षा मंत्री हरियाणा

शिक्षा का हाईटेक होना वक्त की माँग

माध्यमिक शिक्षा के अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-1) सम्वर्तक सिंह ने कहा कि तेजी से बदलती दुनिया के साथ शिक्षा का हाईटेक होना वक्त की मांग है। हर्ष का विषय है कि हरियाणा प्रदेश के राजकीय विद्यालय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के ही नहीं अपितु अत्याधुनिक तकनीक की मदद से शिक्षा देने के केंद्र बन रहे हैं। सामान्य क्लास रूमों को स्मार्ट क्लास रूमों में परिवर्तित करने का कार्य चरणबद्ध ढंग से प्रदेश में चल रहा है। शिक्षकों को पढ़ाने का डिजिटल मंच मिल रहा है। बच्चे नई तकनीक से उन अमूर्त धारणाओं को भी सुगमतापूर्वक आनंदित भाव से सीख रहे हैं जिन्हें मात्र पुस्तक पढ़ने से सीखना कठिन था। सर्वविदित है कि एनिमेशन और ऑडियो विजुअल के रूप में डिजाइन पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की संज्ञात्मक क्षमताओं को विकसित करने में प्रभावी भूमिका निभाता है। प्रदेश सरकार द्वारा सभी संस्कृति आदर्श विद्यालयों में एलईडी टच स्क्रीन बोर्ड, डिजिटल पोडियम आदि अत्याधुनिक सुविधाएँ मुहैया कराई जा रही हैं। इसमें कोई दोराय नहीं कि प्रदेश में विद्यार्थियों को अत्याधुनिक तकनीक के साथ सीखने-सिखाने का बेहतरीन वातावरण प्रदान करने के गंभीर प्रयास हो रहे हैं।

स्मार्ट क्लासरूमः साधारण परिवारों के बच्चों के लिए वरदान

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सैक्टर-6 पंचकूला के प्राचार्य रजनीश कुमार सचदेवा मानते हैं कि स्मार्ट क्लास रूम कोविड काल में बच्चों ही नहीं अध्यापकों के लिए भी वरदान साबित होगा। इसके माध्यम से शिक्षक अपना लैक्चर बच्चों तक सोशल मीडिया के माध्यम से भेज सकेंगे। पहली से बारहवीं कक्षा तक के सभी विषयों की डिजिटल पाठ्य-सामग्री व अभ्यास प्रश्न-पत्र इस पर उपलब्ध होंगे। प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी भी सरकारी विद्यालय के साधारण परिवारों के विद्यार्थी इस प्लेटफार्म पर सुगमता से कर पाएँगे। आज विज्ञान एवं तकनीकी के युग में स्मार्ट क्लास रूम में छात्र विभिन्न प्रोजैक्ट्स के माध्यम से कठिन विषयों को भी सुगमता से सीख सकते हैं। इससे बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ेगा तथा सरलता से ऑनलाइन कार्य करना सीख पाएँगे। हमारे अपने विद्यालय में स्मार्ट क्लास रूम में पढ़ाई करने के बच्चों का सपना साकार हुआ है। इस परियोजना से सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले सैकड़ों विद्यार्थी लाभान्वित होंगे तथा प्रतिस्पर्धा के युग में प्राइवेट स्कूलों से पीछे नहीं रहेंगे।

स्मार्ट बोर्ड ने बदला कक्षा का स्वरूप

असिंद्र कुमार जिला कॉर्डिनटर पंचकूला, संस्कृति मॉडल प्राइमरी स्कूल ने कहा कि बदलते दौर की इस शिक्षा पद्धति ने न केवल बच्चों से पैंसिल-कॉपी को छुड़वाया, साथ ही शिक्षक भी चॉक-डस्टर नहीं पकड़ते। नई पद्धति ने शिक्षा को नए आयाम पर पहुँचा दिया है। स्मार्ट बोर्ड कक्षा के वातावरण को फ्रेंडली बनाता है। स्मार्ट बोर्ड पर चित्रों और वीडियों के सरल माध्यम द्वारा विद्यार्थियों को समझाया जाता है। स्टूडेंट्स भी जल्द समझने के साथ लंबे समय तक याद रखते हैं। यह टच स्क्रीन स्मार्ट बोर्ड है। उँगली के साथ-साथ रंगीन पैन का प्रयोग कर सकते हैं। स्मार्ट बोर्ड ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों प्रकार से काम करता है। ऑनलाइन फंक्शन होने से कक्षा में ही बच्चों को पढ़ाने के लिए ऑडियो-वीडियो डाऊनलोड कर सकते हैं । इसमें लगे कैमरे द्वारा विद्यार्थियों के पाठ्यक्रम को एलईडी पर डिस्प्ले किया जा सकता है। शिक्षक जो पाठ कक्षा में पढ़ाता है, स्मार्ट बोर्ड में उसे रिकॉर्ड करने का प्वॉइंट भी दिया है। जो विद्यार्थी कक्षा में उपस्थित नहीं हुए, उन्हें रिकॉर्डिड वीडियो को दिखाया या ई-मेल भी किया जा सकता है। ग्रीन एवं व्हाइट दोनों बोर्ड इसमें दिये गए हैं। बिजली न होने की स्थिति में इसका प्रयोग शिक्षक कर सकते हैं।

अभिभावकों का सरकारी स्कूलों पर बढ़ा विश्वास

कृष्ण मेहता (हेड इंचार्ज) राजकीय प्राथमिक पाठशाला, सेक्टर-21 पंचकूला ने कहा कि पिछले कुछ वर्षों से अभिभावकों का सरकारी स्कूलों पर विश्वास बढ़ा है। इसका कारण सरकारी स्कूलों में शिक्षा का बढ़ता स्तर और आधुनिक डिजिटल तकनीक से लैस होना है। स्मार्ट क्लासरूम से बच्चों के बैग का बोझ कम हुआ, साथ ही सीखने का लेवल भी बढ़ा है। लेकिन सबसे बड़ी समस्या इस प्रोजेक्ट के मेंटेनेस की है जिसके लिए सरकार को स्कूलों में तकनीकी विशेषज्ञ नियुक्त करने की आवश्यकता है।

प्राथमिक कक्षाओं के लिए स्मार्ट क्लासरूम बहुउपयोगी

क्रांति चावला, कार्यवाहक मुख्य शिक्षक, फतुपुर राजकीय माध्यमिक विद्यालय, कुरुक्षेत्र ने कहा कि यह प्रोजेक्ट सरकारी स्कूलों के लिए बहुत बढ़िया साबित होगा। स्कूल के दो से तीन अध्यापकों को स्मार्ट क्लासरूम की ट्रेनिंग दी जानी चाहिये। स्मार्ट बोर्ड विशेषतौर पर प्राइमरी के विद्यार्थियों के लिए बहुत उपयोगी है,क्योंकि इसमें चित्रों और वीडियो के माध्यम से बच्चों को सिखाया जाता है। जिससे बच्चे लंबे वक्त तक याद रखते हैं। दरअसल आज नींव पर ही काम करने की जरूरत है और स्मार्ट क्लासरूम से बच्चों में रचनात्मकता पैदा होगी।

कराई जाती है। वहीं डिजिटल तकनीक का असर भी सरकारी स्कूलों में देखा गया है। राजकीय विद्यालयों में बच्चों की संख्या में काफी बढ़ोतरी हुई है।

हरियाणा सरकार ने शिक्षा व स्कूलों की स्थिति में सुधार के लिए सार्थक प्रयास किये हैं। सरकार द्वारा प्रदेश के एक हजार 4 सौ 93 प्राइमरी स्कूलों को बैग फ्री व इंग्लिश मीडियम, 137 राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूलों को संस्कृति मॉडल स्कूल बनाकर, सीबीएसई बोर्ड से मान्यता दिलाई गई है।

-मनोज कुमार
स्वतंत्र लेखक, कुरुक्षेत्र

सीएसआर के तहत जिला गुरुग्राम और मेवात के राजकीय विद्यालयों में राइटस कंपनी के सहयोग से 70 स्मार्ट क्लासरूम स्थापित किए जाएँगे, जिस पर लगभग एक करोड़ 31 लाख 60 हज़ार रुपये की लागत आएगी। एक अन्य प्रोजेक्ट के तहत इसी प्रकार के 330 स्मार्ट क्लासरूम प्रदेश के 165 अन्य राजकीय विद्यालयों में पावर ग्रिड कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के सहयोग से स्थापित होंगे। इस प्रोजेक्ट पर पावर ग्रिड 7 करोड़ 80 लाख 90 हजार रुपये से ज्यादा की राशि खर्च करेगा, जिसके तहत हरियाणा प्रदेश के गुरुग्राम सहित 10 जिलों में स्मार्ट क्लास रूम स्थापित होंगे। इनमें गुरुग्राम जिले में 80, फरीदाबाद जिले में 60, हिसार, करनाल, अम्बाला, पंचकूला और यमुनानगर जिलों में प्रत्येक में 20, पानीपत, रोहतक और सोनीपत जिलों में प्रत्येक में 30 स्मार्ट क्लासरूम बनाना शामिल है।

-शिक्षा सारथी डेस्क

स्मार्ट क्लासरूम से विद्यार्थी घर बैठे कर सकते हैं पढ़ाई

जितेंद्र शर्मा, प्रिंसिपल, राजकीय सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बतौड़ ने कहा कि स्मार्ट क्लासरूम का सबसे ज्यादा प्रभाव विद्यार्थियों की संख्या पर पड़ा। स्कूल में बच्चों की संख्या में दो से तीन गुणा बढ़ोतरी हुई है। स्मार्ट क्लासरूम में शिक्षक द्वारा कक्षा में पढ़ाया पाठ रिकॉर्ड हो जाता है, जिसे कभी भी विद्यार्थियों को दिखाया जा सकता है। वहीं रिकॉर्ड वीडियो को बच्चों को ई-मेल कर दिया जाता है। जिससे वे घर बैठे पढ़ाई कर सकते हैं।

स्मार्ट क्लासरूम से कक्षा की बोरियत हुई कम

वंदना आर्य, छात्रा, गवर्नमैंट सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बतौड़, पंचकूला ने बताया कि वह 12वीं कॉमर्स संकाय से कर रही हूँ। कॉमर्स ऐसा संकाय है जिसके फंडे टीचर के समझाए बिना क्लीयर नहीं हो सकते। मेरे स्कूल के शिक्षकों ने लॉकडाउन में भी हमें निरंतर ऑनलाइन पढ़ाया। वहीं स्मार्ट क्लासरूम से कक्षा की बोरियत अब कम हुई है। सीखने की ललक ज्यादा बढ़ी है।

डिजिटल तकनीक से जल्दी समझ में आता है सलेबस

विनाक्षी, विद्यार्थी, कक्षा बारहवीं, गवर्नमैंट सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बतौड़, पंचकूला ने बताया कि लॉकडाउन के दौरान स्कूल बंद हो गए। लेकिन शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन कक्षाएँ ली गईं। शिक्षक स्मार्ट बोर्ड के माध्यम से हमें वर्चुअल पढ़ाते थे। आडियो-वीडियो से सिलेबस जल्द समझ में आ जाता है। सच पूछो तो स्मार्ट बोर्ड हम जैसे साधारण परिवार के विद्यार्थियों के लिए वरदान साबित हुए हैं।

संस्कृति प्राथमिक विद्यालय : ज्ञान, कौशल एवं राष्ट्र-निर्माण के केन्द्र

प्रमोद कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की अनुपालना में राज्य द्वारा निर्णय लिया गया है कि महाग्रामों, शहरों तथा बड़े कस्बों में जहाँ एक से अधिक प्राथमिक विद्यालय हैं, वहाँ 1418 संस्कृति प्राथमिक विद्यालय बनाये जायें, क्योंकि ज्ञान के परिदृश्य में पूरा विश्व तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। बिग डेटा, मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में हो रहे बहुत से वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के चलते आने वाले वर्षों में विश्व भर में अकुशल कामगारों की जगह मशीनें काम करने लगेंगी तथा डेटा साइंस, कंप्यूटर साइंस और गणित के क्षेत्रों में ऐसे कुशल कामगारों की जरूरत और माँग बढ़ेगी जो विज्ञान, समाज विज्ञान और मानविकी के विविध विषयों में योग्यता रखते हों। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और घटते प्राकृतिक संसाधनों की वजह से हमें ऊर्जा, भोजन, पानी स्वच्छता आदि की आवश्यकताओं को पूरा करने के नए रास्ते खोजने होंगे और इस कारण भी जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान, कृषि, जलवायु विज्ञान और समाज विज्ञान के क्षेत्रों में नए कुशल कामगारों की जरूरत होगी। मानविकी और कला की माँग बढ़ेगी, क्योंकि भारत एक विकसित देश बनने के साथ-साथ दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की ओर अग्रसर है। इसलिए शिक्षा की नींव अर्थात् प्राथमिक शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता है। अतः भविष्य के लिए तैयार होने के उद्देश्य से सरकार का यह कदम बहुत कल्याणकारी है।

रोज़गार और वैश्विक परिस्थितियों में तीव्र गति

शिक्षाः गुणवत्तापूर्ण भी और हाईटैक भी

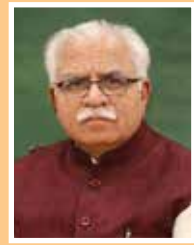

प्रदेश में बच्चों को गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से हर खंड में डिजिटल सुविधाओं से युक्त मॉडल संस्कृति स्कूल भी खोले जा रहे हैं। समय के साथ-साथ शिक्षा का स्वरूप बदलता जा रहा है। वहीं, दूसरी ओर कोरोना महामारी ने बच्चों को हाईटेक कर दिया गया है। इसके चलते बच्चे घर बैठकर मोबाइल से पढ़ाई करने के लिए विवश हो गए हैं। इसको देखते हुए हरियाणा सरकार द्वारा स्कूलों को वेब बेस्ड स्मार्ट स्कूलों में बदलने का कार्य तेजी से किया जा रहा है।

बजट अनुमान 2021-22 में शिक्षा के लिए कुल 18,410 करोड़ रुपये के परिव्यय का प्रस्ताव किया गया है। इसमें से 9,014 करोड़ रुपए प्राथमिक शिक्षा के लिए आबंटित किए गए हैं। 4000 प्ले-वे स्कूल खोलने के प्रस्ताव से बच्चों का सर्वांगीण विकास होगा। पहले चरण में, स्कूल परिसरों या विभागीय भवनों में संचालित 1135 आँगनवाड़ी केन्द्रों को प्ले-वे स्कूल में अपग्रेड किया जाएगा। दूसरे चरण में, 2021-22 में 2865 आँगनवाड़ी केन्द्रों को प्ले-वे स्कूल में अपग्रेड किया जाएगा।

मनोहर लाल
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संस्कृति मॉडल स्कूल : नवीनतम तकनीक से लैस गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के केंद्र

सीबीएसई के प्रति अभिभावकों के रूझान को देखते हुए ही हरियाणा सरकार ने संस्कृति मॉडल स्कूलों की संख्या 23 से बढ़ाकर 136 की है और ये संस्कृति मॉडल स्कूल सीबीएसई से सम्बद्ध कराए गए हैं। संस्कृति मॉडल स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई कराई जा रही है। भवनों के निर्माण तक नए सरकारी मॉडल संस्कृति सीनियर सेकेंडरी स्कूल मौजूदा सरकारी स्कूलों में चलेंगे। इन स्कूलों के लिए शिक्षकों का एक अलग कैडर है और इनका चयन मौजूदा सरकारी स्कूलों के शिक्षण स्टाफ में से स्क्रीनिंग के आधार पर किया जा रहा है। इसके अलावा, इन स्कूलों के लिए शिक्षकों की एक अलग स्थानांतरण नीति तैयार की गई है। कमरों के लिए फर्नीचर, स्मॉक डिटेक्टर, अग्निशमन उपकरण, सीसीटीवी, सौर ऊर्जा पैनल और भूनिर्माण जैसी बुनियादी सुविधाओं के अलावा, ये सभी संस्कृति मॉडल स्कूल छात्रों के लिए डिजिटल सुविधाओं से युक्त होंगे। शिक्षा सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है। मुझे लगता है कि संस्कृति मॉडल स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव लेकर आएँगे।

कँवर पाल,
शिक्षा मंत्री, हरियाणा

से आ रहे परिवर्तनों की वजह से यह जरूरी हो गया है कि बच्चों को जो कुछ सिखाया जा रहा है, उसे तो सीखें ही और साथ ही वे सतत सीखते रहने की कला भी सीखें। शिक्षा में विषयवस्तु को बढ़ाने की जगह इस बात पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है जिससे बच्चे समस्या समाधान और तार्किक एवं रचनात्मक रूप से सोचना सीखें, विविध विषयों के बीच आपसी सम्बन्धों को देख पायें, कुछ नया सोच पायें और नयी जानकारी को नई और बदलती परिस्थितियों में उपयोग में ला पायें। समय की जरूरत है कि शिक्षण प्रक्रिया शिक्षार्थी-केन्द्रित हो, जिज्ञासा, खोज, अनुभव और संवाद के आधार पर संचालित हो, लचीली हो और समग्रता और समन्वित रूप से देखने समझने में सक्षम बनाने वाली हो, बाल मनोविज्ञान पर आधारित हो, रुचिपूर्ण हो। साथ ही यह बच्चों के जीवन के सभी कौशलों, पक्षों और क्षमताओं का संतुलित विकास करे। इसके लिए पाठयक्रम में विज्ञान और गणित के अलावा बुनियादी कला, शिल्प, मानविकी, खेल और फिटनेस, भाषाओं, साहित्य, संस्कृति और मूल्य का अवश्य ही समावेश किया जाये जिसे शिक्षण शास्त्र की भाषा में करीकुलर, एक्स्ट्रा करीकुलर के नाम से जाना जाता है।

शिक्षा से चरित्र-निर्माण होना चाहिए, शिक्षार्थियों में नैतिकता, तार्किकता, करूणा और संवेदनशीलता विकसित करनी चाहिए और साथ ही रोज़गार के लिए सक्षम बनाना चाहिए। इन सब लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास होने आरम्भ हो गए हैं तथा राज्य सरकार पूर्ण संवेदनशीलता से इस कार्य को करने का मन बना चुकी है।

माननीय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा बजट भाषण में स्पष्ट कहा गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति को वर्ष 2030 की अपेक्षा 2025 में लागू किया जाएगा। इसके लिए नये संस्कृति प्राथमिक विद्यालयों की स्थापना का निर्णय मुख्यमंत्री महोदय द्वारा लिया गया है, जिसका लक्ष्य हमारे राज्य हरियाणा तथा देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है। भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन, प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमताओं के विकास पर विशेष बल तथा साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ-साथ उच्च प्राथमिक स्तर की तार्किक और समस्या-समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करते हुए नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से प्रारंभ के वर्षों में नींव के स्तर पर चहुँमुखी विकास संभव किया जा सकता है। संस्कृति प्राथमिक विद्यालयों में नींव स्तर पर ही प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परंपरा के आलोक में शिक्षा प्रदान की जाएगी। प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य सांसारिक जीवन अथवा स्कूल के बाद के जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान अर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्म-ज्ञान और मुक्ति के रूप में माना गया था। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन भारत के विश्व-स्तरीय संस्थानों ने अध्ययन के विविध क्षेत्रों में शिक्षण और शोध के ऊँचे प्रतिमान स्थापित किये थे और विभिन्न पृष्ठभूमि और देशों से आने वाले विद्यार्थियों और विद्वानों को लाभान्वित किया था। ये विद्यालय उसी गरिमापूर्ण इतिहास की वापसी के लिए नींव का कार्य करेंगे। इसी शिक्षा व्यवस्था ने चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि दत्ता, माधव, पाणिनि, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगला, मैत्रेयी, गार्गी और थिरुवल्लुवर जैसे अनेक महान विद्वानों को जन्म दिया। इन विद्वानों ने वैश्विक स्तर पर ज्ञान के विविध क्षेत्रों जैसे गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और शल्य चिकित्सा, सिविल इंजीनियरिंग, भवन निर्माण, नौकायान-निर्माण और दिशा ज्ञान, योग ललित कला, शतरंज इत्यादि में प्रामाणिक रूप से मौलिक योगदान किये। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ये संस्कृति प्राथमिक विद्यालय भविष्य में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले हैं। इस कार्य में ऐतिहासिक रूप से हाशिए पर रह रहे समुदायों, वंचित और अल्प-प्रतिनिधित्व वाले समूहों पर विशष ध्यान दिए जाने की जरूरत होगी। शिक्षा बराबरी सुनिश्चित करने का बड़ा माध्यम है और इसके द्वारा समाज में समानता, समावेशन और सामाजिक-आर्थिक रूप से गतिशीलता हासिल की जा सकती है। ऐसे समूहों के सभी बच्चों के लिए इन प्राथमिक संस्कृति विद्यालयों में परिस्थितिजन्य बाधाओं के बावजूद, हर संभव पहल की जाएगी जिससे वे शिक्षा व्यवस्था में प्रवेश भी पा सकें और उत्कृष्ट प्रदर्शन भी कर सकें। इन प्राथमिक संस्कृति विद्यालयों में इन सब प्रावधानों का समावेश प्रदेश की समृद्ध विविधता और

संस्कृति के प्रति सम्मान रखते हुए और साथ ही राज्य की स्थानीय और राष्ट्रीय संदर्भ में आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए होगा। हरियाणा के बच्चों को राज्य और राष्ट्र के बारे में और इसकी विविध सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी आवश्यकताओं सहित यहाँ की अद्वितीय कला, राग-रागनी, नृत्य, बोली, भाषा और ज्ञान परंपराओं के बारे में ज्ञानवान बनाना, राष्ट्रीय गौरव, आत्मविश्वास, आत्मज्ञान, परस्पर सहयोग और एकता की दृष्टि से और भारत के सतत ऊँचाइयों की ओर बढ़ने की दृष्टि से अति आवश्यक है और यह कार्य इन प्राथमिक संस्कृति विद्यालयों के माध्यम से किया जाएगा।

इन प्राथमिक संस्कृति विद्यालयों का उद्देश्य अच्छे इंसानों का विकास करना है जो तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम हों, जिनमें करुणा और सहानुभूति, साहस और लचीलापन, वैज्ञानिक चिंतन और रचनात्मक कल्पनाशक्ति, नैतिक मूल्य और आधार हों। इन विद्यालयों का उद्देश्य ऐसे नागरिकों को तैयार करना है जो अपने संविधान द्वारा परिकल्पित-समावेशी और बहुलतावादी समाज के निर्माण में बेहतर तरीके से योगदान करें। इन संस्कृति मॉडल विद्यालयों में निम्न मूलभूत सिद्धांतों पर कार्य किया जाएगा तथा इसके लिए बुनियादी स्तर पर प्रयास किये जाएँगे।

ये विद्यालय अन्य विद्यालयों से ढाँचागत सुविधाओं, अध्यापक स्थापना, शिक्षण के विषयों, शिक्षण के माध्यम से तो भिन्न होंगे ही अपितु इनमें राष्ट्र निर्माण का कार्य भी प्राथमिकता से किया जाएगा। इन विद्यालयों में होने वाले खर्च के लिए अलग से वित्त व्यवस्था की गई है तथा इसे शिक्षा में निवेश के रूप में देखा जा रहा है। यह विद्यालय निम्नलिखित सिद्धांतों पर चलेंगे तथा उपरोक्त लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अन्य विद्यालयों से निम्नानुसार भिन्न होंगे-

1.हर बच्चे की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना-

इन संस्कृति मॉडल विद्यालयों में प्राथमिकता से ही शिक्षकों और अभिभावकों को बच्चों की इन क्षमताओं के प्रति संवेदनशील बनाया जाएगा जिससे वे बच्चे की अकादमिक और अन्य क्षमताओं में,उसके सर्वांगीण विकास पर भी पूरा ध्यान दें तथा उन्हें राष्ट्र निर्माण के लिए तैयार करें व उनकी नींव मजबूत करें। प्रत्येक बच्चा अलग है, अतः इसमें प्रत्येक विद्यार्थी का Individualized Educational Programme (IEP) बनाया जाएगा।

2.बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान को सर्वाधिक प्राथमिकता देना-

इन विद्यालयों में ऐसे प्रावधान किये जाएँगे जिससे सभी बच्चे तीसरी कक्षा तक साक्षरता और संख्याज्ञान जैसे सीखने के मूलभूत कौशलों को हासिल कर सकें। आरंभ के वर्षों में जो बच्चा शिक्षण-अधिगम में पिछड़ जाता है उसकी भरपाई करना बहुत कठिन हो जाता है। अतः सभी बच्चों को साथ लेकर चलना अनिवार्य होगा।

3.सभी विषयों को समान महत्त्व-

इन विद्यालयों में कला और विज्ञान के बीच, पाठ्यक्रम और पाठ्येतर गतिविधियों के बीच, व्यावसायिक और शैक्षणिक धाराओं आदि के बीच कोई स्पष्ट अलगाव नहीं होगा जिससे ज्ञान, शिक्षण और अधिगम क्षेत्रों के बीच हानिकारक ऊँच-नीच और परस्पर दूरी एवं असंबद्धता को दूर किया जा सके। यह व्यवस्था मजबूती से बनाई जाएगी तथा बालक के चहुँमुखी विकास के मार्ग खोलेगी।

4.बहु-विषयक और समग्र शिक्षा-

इन विद्यालयों में सभी ज्ञान की एकता और अखंडता को सुनिश्चित करने के लिए एक बहु-विषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल के बीच एक बहु-विषयक और समग्र शिक्षा के विकास की समुचित व्यवस्था की जाएगी। एक विषय को पढ़ाते हुए उसे अन्य विषयों के साथ जोड़कर पढ़ाया जाएगा।

5.समझ से सीखने पर बल-

इन विद्यालयों में यह व्यवस्था होगी जिसमें अवधारणात्मक समझ पर जोर (न कि रटंत पद्धति और

केवल परीक्षा के लिए पढ़ाई) दिया जाएगा ताकि विद्यार्थी समझ से सीखें, उसे अपनायें, उसका उपयोग करें, जीवन में लागू करें, व्यवहार में लायें तथा दैनिक जीवन में हर समय अवलोकन करते हुए चलें।

6.रचनात्मकता और तार्किक सोच-

तार्किक निर्णय लेने और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए इन विद्यालयों में समुचित वातावरण बनाया जाएगा। इस प्रकार से पठन-पाठन प्रक्रिया का संचालन होगा जिससे विद्यार्थी मौन रहकर स्वीकार न करें, उनकी तर्कशक्ति का विकास किया जाएगा। क्या है, क्यों है, कैसे है, किसलिए है, इसका उपयोग कैसे है आदि पर चर्चा करें, प्रश्न पूछने तथा जिज्ञासा पैदा करने को और कौतूहल पैदा करने को स्थान दिया जाएगा।

7.नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों को महत्त्व-

इन विद्यालयों में सहानुभूति, दूसरों के लिए सम्मान, स्वच्छता, शिष्टाचार, लोकतांत्रिक भावना, सेवा की भावना, सार्वजनिक संपत्ति के लिए सम्मान, वैज्ञानिक चिंतन, स्वतंत्रता, जिम्मेदारी, बहुलतावाद, समानता, सहिष्णुता और न्याय जैसे महत्त्वपूर्ण बिन्दु विद्यार्थियों के आचरण का भाग बनें, इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

8.बहु-भाषिकता भाषा की शक्ति को प्रोत्साहन-

इन विद्यालयों में भाषा की शक्ति को बढ़ावा देने के लिए, बहु-भाषिकता को लागू करने के लिए शिक्षण का माध्यम अंग्रेजी भाषा होगा। अन्तरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा और उपलब्ध रोज़गार के अवसरों में भागीदारी बढ़ाने के उद्देश्य से यह अनिवार्य है। अन्य भाषाओं को पूरा समय और सम्मान दिया जाएगा। बच्चों की रुचि तथा आवश्यकता के अनुसार भारत की विभिन्न क्लासिकल भाषाओं जैसे संस्कृत, तमिल, तेलगू आदि के साथ भी पाँचवीं कक्षा में बच्चों की रुचि पैदा करके परिचय करवाया जाएगा।

9.सीखने के लिए सतत मूल्यांकन पर जोर-

इन विद्यालयों में सतत एवं समग्र मूल्यांकन अनिवार्य रूप से लागू किया जाएगा। बालक के चहुँमुखी विकास के लिए छोटे-छोटे अन्तराल पर मूल्यांकन तदनुसार निदान एवं उपचार की पद्धति को अपनाया जाएगा।

10.तकनीकी के यथासंभव उपयोग पर जोर-

अध्यापन कार्य में, भाषा संबंधी बाधाओं को दूर करने में, दिव्यांग बच्चों के लिए शिक्षा को सुलभ बनाने में, शैक्षणिक नियोजन और प्रबंधन में तथा मूल्यांकन में यथासंभव आईसीटी तथा डिजिटल शिक्षा जिसमें स्मार्ट क्लासरूम आदि की व्यवस्था की जाएगी। विभिन्न लर्निंग मैनेजमैंट सिस्टम, लर्निंग एप्प, इंटरएक्टिव लर्निंग जैसे तरीकों का समुचित उपयोग किया जाएगा।

11.सभी शैक्षिक निर्णयों की आधारशिला के रूप में पूर्ण समता और समावेशन-

एक आदर्श और समावेशी समाज के निर्माण के लिए कार्य किया जाएगा। साथ ही शिक्षा को लोगों की पहुँच और सामर्थ्य के दायरे में रखना इसका लक्ष्य होगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी छात्र शिक्षा प्रणाली में सफलता हासिल कर सकें, विशेष प्रयास किये जाएँगे। इसमें लाभ से वंचित वर्ग, कमज़ोर वर्ग, पिछड़े वर्ग तथा अन्य सभी सोशियली इकनोमिकली डिसएडवांटेज ग्रुप यानी एसईडीजी को शामिल किया जाएगा।

12.शिक्षकों और संकाय को सीखने की प्रक्रिया का केंद्र मानना-

इन विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों को इस प्रकार प्रशिक्षित करके विभिन्न विधाओं में दक्ष बनाया जाएगा ताकि इन संस्कृति विद्यालयों को सीखने की प्रक्रिया के केन्द्र बना सकें। अध्यापकों को विशेष प्रशिक्षण से तैयारी की उत्कृष्ट व्यवस्था, निरंतर व्यावसायिक विकास और सकारात्मक कार्य वातावरण और सेवा की स्थिति आदि सभी विषयों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। उनके प्रदर्शन के अनुसार उन्हें अतिरिक्त लाभ-सेवा विस्तार एवं पुरस्कार दिया जाएगा। उन्हें एक समूह में कार्य करने तथा योजना बनाकर कार्य करने एवं संयुक्त प्रयास से लक्ष्य प्राप्त करने का अभ्यस्त बनाया जाएगा।

13.विशेष एवं प्रभावी संस्कृति मॉडल विद्यालय ढाँचा-

शैक्षिक प्रणाली की पारदर्शिता और संसाधन कुशलता, ऑडिट और सार्वजनिक प्रकटीकरण के माध्यम से सुनिश्चित करने के लिए एक 'हल्का, लेकिन प्रभावी' नियामक ढाँचा बनाया जाएगा। स्वायत्तता, सुशासन और सशक्तीकरण के माध्यम से नवाचार और आउट-ऑफ-द-बॉक्स विचारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से एक अलग व्यवस्था बनाई जाएगी जिसमें एक विशेष प्रकोष्ठ तथा एक अतिरिक्त अधिकारी के मार्गदर्शन में यह विद्यालय काम करेंगे। इसमें शिक्षण शास्त्र के लिए राष्ट्रीय तथा अन्तरराष्ट्रीय संस्था को जिसे सलाहकार/परामर्शी के रूप में शामिल किया जाएगा ताकि उनकी विशेषज्ञता से अध्यापन, अध्यापक प्रशिक्षण, पाठयचर्या निर्माण, पाठयक्रम निर्माण, अभ्यास पुस्तिका, कार्य पुस्तिका, पर्यवेक्षण एवं मूल्यांकन, कक्षा प्रबन्ध, बाल मनोविज्ञान, खेल-खेल में शिक्षा तथा रुचिकर बाल केन्द्रित शिक्षा जैसे

विषयों पर उत्कृष्ट कार्य किया जा सके।

14.समुचित एवं संतुलित छात्र अध्यापक अनुपात तथा कुशल प्रबन्धक एवं प्रशासक-

इन विद्यालयों में प्रति कक्षा एक अध्यापक अनिवार्य रूप से उपलब्ध करवाया जाएगा ताकि बहु कक्षा शिक्षण यानी मल्टीग्रेड टीचिंग की समस्या से बचा जा सके। प्रत्येक कक्षा में 30 विद्यार्थी होंगे तथा इन विद्यालयों में एक मुख्य शिक्षक भी होगा ताकि विद्यालय के अध्यापकों को प्रबन्धन जैसे कार्यों से मुक्त रखकर पूर्ण रूप से शिक्षण अधिगम पर केन्द्रित किया जा सके। यह कार्य अति कुशल एवं प्रशिक्षित मुख्य शिक्षक के माध्यम से होगा। इन अध्यापकों को स्कूल से बाहर के अन्य गैर शैक्षणिक कार्यों जैसे बीएलओ ड्यूटी, जनगणना, सर्वेक्षण इत्यादि से भी मुक्त रखा जाएगा।

15.गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के लिए शोध-

ये विद्यालय शोध के केन्द्रों के रूप में कार्य करेंगे ताकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के लक्ष्यों, एसडीजी-4 के लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके। इन विद्यालयों में समय-समय पर शोध करवाये जाएँगे ताकि यह प्रगति जाँची जा सके एवं अन्य विद्यालयों में भी इसका विस्तार किया जा सके। शैक्षिक विशेषज्ञों, एनसीईआरटी, एनसीटीई, क्यूसीआई, एनआईईपीए जैसे संस्थानों के माध्यम से निरन्तर अनुसंधान और नियमित मूल्यांकन के आधार पर प्रगति की सतत एवं निरन्तर समीक्षा की जाएगी। एनएएस जैसे टैस्ट के अतिरिक्त पीआईएसए जैसे अन्तरराष्ट्रीय कार्यक्रमों में भाग लेना इन विद्यालयों का मुख्य लक्ष्य होगा।

16.योग एवं ध्यान के माध्यम से भारतीय जड़ों और गौरव से संबद्ध रहना-

जहाँ प्रासंगिक लगे वहाँ भारत की समृद्ध और विविध प्राचीन और आधुनिक संस्कृति और ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं को शामिल किया जाएगा और उनसे प्रेरणा लेकर इन विद्यालयों का शिक्षण शास्त्र, पठन-पाठन पद्धति, दैनिक क्रियाकलाप, अभ्यास एवं मूल्यांकन, समय-सारणी का निर्माण किया जाएगा। इन विद्यालयों में योग को पाठयक्रम के रूप में शामिल किया जाएगा। ये विद्यालय योग प्रशिक्षण के केन्द्र बनेंगे ताकि नींव के स्तर पर ही विद्यार्थी योग को स्वीकार, अंगीकार करें, अभ्यस्त हों। योगासन, प्राणायाम तथा ध्यान के लिए विशेष व्यवस्था की जाएगी। गीता के मूल्यों को आचरण में कैसे लाया जाए, इसका समुचित प्रबन्ध होगा।

17.शिक्षा एक सार्वजनिक सेवा है-

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुँच को प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना गया है। इसमें निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 के सभी प्रावधानों को लागू किया जाएगा तथा सभी प्रकार की हकदारियाँ उपलब्ध करवाई जाएँगी।

18.एक मजबूत, जीवंत सार्वजनिक शिक्षा प्रणाली में पर्याप्त निवेश-

उपरोक्त विद्यालयों में सभी ढाँचागत सुविधायें जो इन्हें विश्वस्तरीय बनाने में सहायक होंगी, के लिए समुचित खर्च किया जाएगा। शिक्षा पर किया जाने वाला खर्च एक निवेश है तथा इसी दृष्टिकोण से ही इन विद्यालयों को बजट उपलब्ध करवाया जाएगा। इसके लिए मुख्यमंत्री महोदय द्वारा समुचित मात्रा में बजट आबंटित किया गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे हैं क्रांतिकारी बदलाव

- हरियाणा सरकार का लक्ष्य 2025 से पहले एनईपी के अधिकांश घटकों को लागू करके राष्ट्र के शैक्षणिक मानचित्र पर एक अलग पहचान बनाने का है।
- हरियाणा सरकार के सक्षम हरियाणा कार्यक्रम के तहत तीसरी से आठवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों की वैचारिक समझ बढ़ावा देने के लिए 700 करोड़ की राशि आबंटित की जाएगी, जिसमें डिजिटल टैबलेट, डिजिटल क्लासरूम आदि का प्रावधान शामिल होगा।
- समावेशित शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से, कक्षा 9वीं से 12वीं तक सभी विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा प्रदान की जाएगी।
- गुणवत्तापरक शिक्षा और उनके लिए अवसर सुनिश्चित करने हेतु 192 करोड़ की राशि आबंटित की जाएगी। इन समूहों से नामांकन में सुधार हेतु लक्षित समूहों के लिए विशेष शिक्षा क्षेत्र (एसईजेड) बनाकर वंचित समूहों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। इन एसईजेड में छात्राओं को उच्च वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए 114.52 करोड़ का एक जेंडर इंक्लूजन फंड (जीआईएफ) बनाया जाएगा।
- आरोही, कस्तूरबा गांधी और मेवात मॉडल स्कूलों को मॉडल संस्कृति स्कूल के स्तर पर अपग्रेड करके एकीकृत किया जाएगा।
- 'सुपर-100' कार्यक्रम भारत के अति प्रतिष्ठित संस्थान के लिए सरकारी स्कूलों से प्रतिभा तराशने में सफल रहा है। इसलिए इस कार्यक्रम का विस्तार दो और केन्द्रों-हिसार और करनाल तक किया जाएगा। इस संबंध में 10 करोड़ रुपए आबंटित किए जाएँगे।
- राज्य के स्कूलों में अत्याधुनिक उपकरणों से लैस 50 ऊष्मायन केन्द्र (दक्ष सेंटर) बनाए गए हैं, जिसमें नौ मुख्य कौशलों को समाहित किया गया है। ये ऊष्मायन केन्द्र 'एंटरप्रेन्योरियल माइंडसेट' पर ध्यान केंद्रित करके विद्यार्थियों को उद्यमी बनने में सहायता करेंगे। इसे और आगे ले जाते हुए, हरियाणा 2025 तक कम से कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों तक व्यावसायिक शिक्षा का विस्तार करने का कार्य करेगा और इस वर्ष इस संबंध में 10 करोड़ की राशि आबंटित की जाएगी।
- हरियाणा के सरकारी स्कूलों में 'स्कूल लीविंग सर्टिफिकेट' के बिना पढ़ने वाले विद्यार्थियों का विवरण अब 'मैनेजमेंट इंफोर्मेशन सिस्टम' (एमआईएस) में अपडेट किया जा सकेगा।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

'फेस लिफ्टिंग' से दमक उठा स्कूलों का चेहरा

निजी स्कूलों को मात देने लगे हैं सरकारी स्कूल

किसी ने सही कहा है कि फर्स्ट इंप्रैशन इज द लास्ट इंप्रैशन। कुछ इसी प्रकार की मानवों की प्रवृत्ति होती है कि वे किसी भी वस्तु या स्थान के बाहरी स्वरूप को देखकर उसके बारे में ज्यादातर अंदाजा लगाने की कोशिश करता है। लोगों की इसी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद ने एक महत्त्वपूर्ण और सकारात्मक पहल की। परिषद् ने जनता की नजरों में आने वाले स्कूल के मुख्य भाग, यानी स्कूल का चेहरा सुधारने के लिए फेस लिफ्टिंग नाम की एक महत्त्वपूर्ण योजना शुरू की है।

ये चित्र जो आप देख रहे हैं वे किसी निजी स्कूल के नहीं बल्कि हमारे हरियाणा के सरकारी स्कूलों के हैं। सरकारी स्कूलों की इस कायापलट के पीछे फेस लिफ्टिंग का ही हाथ है। इस योजना ने अपना पूरा असर दिखाया और मेहनती व लगनशील अध्यापकों ने अपनी रचनात्मकता से स्कूलों की काया पलट कर रख दी। उन्हें जनता के आकर्षण का केन्द्र बना दिया और बच्चों के लिए सीखने और रचनात्मकता दिखाने के अवसर पैदा कर दिए। वर्ष 2019-20 में पहली बार ग्रांट जारी करने के बाद स्कूलों में दिखे सकारात्मक बदलाव से उत्साहित विभाग ने वर्ष 2020-21 के लिए भी बजट जारी कर दिया।

स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद् ने वर्ष 2019-20 में अपने पत्र क्रमांक SS/Plg 56298-56318 दिनांक 24/02/2020 में राज्य के 22 जिलों के लिए 4634.80 लाख रुपए की राशि जारी की गई। इसके तहत राज्य के 4471 प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के लिए 3129.70 लाख रुपए तथा 1038 सैकेंडरी व सीनियर सैकेंडरी स्कूलों के लिए 1505.10 लाख रुपए की राशि जारी की गई। परिषद के निर्देशों के अनुसार प्राइमरी व मिडिल स्कूलों के लिए प्रति स्कूल 70000 रुपए की राशि जारी की गई वहीं सैकेंडरी व सीनियर सैकेंडरी स्कूलों के लिए प्रति स्कूल 1.45 लाख रुपए की राशि जारी की गई। इसके तहत स्कूलों में रचनात्मक कार्यों को पूर्ण करवाने पर जोर दिया गया था। इसमें यह भी साफ तौर पर कहा गया कि इस राशि को स्कूलों के चेहरे को सुधारने पर ज्यादा व्यय किया जाए। जैसे ही यह राशि स्कूलों के लिए जारी हुई तो स्कूलों के मुखिया एवं अध्यापकों को अपनी रचनात्मकता दिखाने का सुनहरी अवसर मिल गया। बहुत से स्कूल मुखियाओं ने स्कूल के मेन गेट पर शिक्षात्मक एवं आकर्षक चित्रकारी करवाई, वहीं स्कूलों की चारदीवारी को भी बच्चों के सपनों से रंग दिया। स्कूलों के मेन गेट अब पुराने उबाऊ नहीं दिखते बल्कि वे भी एक शिक्षण सामग्री में तब्दील हो गए हैं। स्कूलों की चारदीवारी भी विभिन्न प्रकार की पेंटिंग्ज़ जिनमें पानी बचाने, बेटी बचाओ, पर्यावरण संरक्षण, शिक्षा के महत्व, पृथ्वी की रक्षा, सौर परिवार और सामान्य जानकारी सहित अनेक विषयों से पट दी गई। अध्यापकों ने अपनी रचनात्मकता से स्कूल भवन के बरामदों व कमरों की तो छोड़ो बिल्डिंग के सामने की दीवारों को भी आकर्षक शिक्षात्मक चित्रों में बदल दिया। विभाग द्वारा पहले वर्ष जारी की गई राशि के बाद दूसरे वर्ष भी जिला परिषद के माध्यम से स्कूलों को फेस लिफ्टिंग की राशि जारी की

गई। इसके बाद तो जैसे स्कूलों में नई बयार के पंख ही लग गए। स्कूल स्टाफ व मुखिया ने तो स्कूलों की रंगत ही बदल दी। अब फेस लिफ्टिंग ग्रांट प्राप्त स्कूलों की बिल्डिंग किसी बड़े पब्लिक स्कूल को मात देने लगी है।

स्कूल बिल्डिंग का हर कोना अब टीएलएम नजर आने लगा है। कमरों के आगे सुंदर पार्क, फूलों से सजी क्यारियाँ, सुंदर रास्ते व दीवारें सबका मन मोहने लगी हैं। बरामदों के सामने दीवार पर कहीं पहाड़े, कहीं अंग्रेज़ी एल्फाबैट, हिंदी वर्णमाला, पक्षियों, पशुओं के नाम, महीनों व मौसम के नाम, प्रमुख राष्ट्रीय चिह्न, रंगों के नाम, भौतिकी के नियम, विज्ञान के नियम, सौर परिवार, महीनों व दिनों के नाम, त्यौहारों के नाम, मौलिक कर्तव्य, देश के वैज्ञानिकों के नाम, उनके आविष्कार के अलावा गणित के अनेक सूत्रों को दीवारों पर सुन्दर तरीके से चित्रित कर छात्रों के लिए उन्हें सीखना या याद रखना सरल बना दिया है। फेस लिफ्टिंग ग्रांट से स्कूलों के सुधरे स्वरूप से ग्रामीण व अभिभावक भी प्रभावित होने शुरू हो गए हैं तथा स्कूलों को खुलकर दान देने लगे हैं। दानवीरों के दान व फेस लिफ्टिंग की वजह से स्कूलों में नई शिक्षण सहायक सामग्रियाँ भी मिलनी शुरू हो गई हैं। लाइब्रेरी की पुस्तकें, मेजें, इनवर्टर बैटरी, एलईडी टीवी, इंटरेक्टिव बोर्ड, व्हाइट बोर्ड, पंखे व वाटर कूलर जैसे उपयोगी संसाधन भी स्कूलों को फेस लिफ्टिंग व दानवीरों के दान से उपलब्ध होने शुरू हो गए हैं। जहाँ पहले स्कूलों में मूलभूत वस्तुओं की भी कमी थी, फेस लिफ्टिंग के बाद उन स्कूलों में बच्चों को बेहतरीन सुविधाएँ उपलब्ध करवा दी गई हैं। अब बच्चे सुन्दर, हवादार एवं रंगीन टीएलएम सजे कमरों में अपनी पढ़ाई प्राप्त कर रहे हैं। स्कूलों में विज्ञान एवं गणित की प्रयोगशालाएँ अब बेजान नहीं बल्कि आकर्षक व संसाधनों से भरपूर नज़र आने लगी हैं। अगर बात करें हिसार जिले के कुछ स्कूलों की तो जिले के गाँव कुलेरी, किरमारा, सिवानी बोलान, भाणा, फ्रांसी, किनाला, कालीरावण, पाबड़ा, बालक, गंगवा व अग्रोहा के स्कूलों में फेस लिफ्टिंग की ग्रांट से बेहतरीन कार्य हुए हैं, जिनकी वजह से स्कूल अब सौंदर्य से परिपूर्ण नज़र आने लगे हैं।

सीआर काजला
जेबीटी अध्यापक
राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला कुलेरी
हिसार, हरियाणा

सुनहरे सपनों को नई उड़ान देता उम्मीद पोर्टल

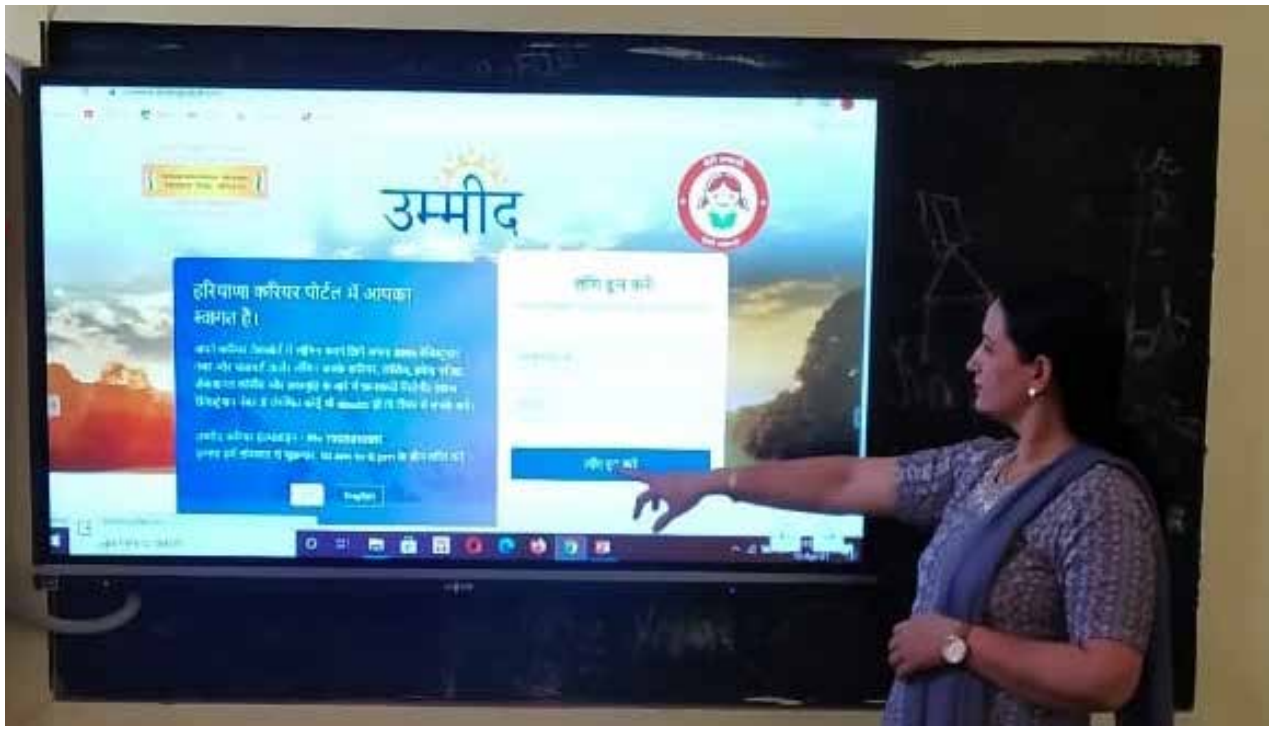

सुमन मलिक

अक्सर हम देखते हैं कि अनेक प्रतिभाएँ उचित सलाह और मार्दर्शन के अभाव में दम तोड़ देती हैं। बहुत से विद्यार्थी अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार सफलता अर्जित नहीं कर पाते। अधिकांश विद्यार्थियों को यह भी नहीं पता होता कि वे भविष्य में क्या करना चाहते हैं? वे अपने करियर को लेकर अनेक प्रश्नों के भंवरजाल में उलझे रहते हैं, जूझते रहते हैं कि उन्हें किस क्षेत्र का चुनाव करना चाहिए, वे उस क्षेत्र में आगे कैसे बढ़ेंगे? उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती होती है सही करियर का चुनाव।

अनेक लोग यह समझने में ही आधी जिंदगी व्यतीत कर देते हैं कि उनकी पसंद क्या है, उनके अंदर क्या अच्छा करने की शक्ति है और वे किस क्षेत्र में अपना बेहतर करियर बना सकते हैं। वे अपनी योग्यता, रुचि और क्षमता के अनुसार व्यवसाय का चुनाव नहीं कर पाते, इसलिए वे आजीवन पछताते रहते हैं। उनके मन में यह टीस रहती है कि काश उन्हें उचित समय पर उचित मार्गदर्शन मिल जाता तो उनका जीवन यूँ बोझिल न होता और वे कुछ बेहतर कर सकते थे। करियर मार्गदर्शन हर विद्यार्थी के जीवन का सबसे अहम हिस्सा होता है। सफल भविष्य निर्माण के लिए मार्गदर्शन की महती भूमिका होती है।

हम देखते हैं कि विद्यार्थी दसवीं कक्षा पास करने के बाद अपने आप को दोराहे पर खड़ा पाते हैं, उन्हें कौन से संकाय का चुनाव करना है, कहाँ दाखिला लेना है, भविष्य में क्या करना है? वे बिना किसी योजना के, बिना किसी लक्ष्य निर्धारण के अपने दोस्तों की देखादेखी अथवा अभिभावकों के दबाव में कोई भी संकाय चुन लेते हैं या किसी भी संस्थान में दाखिला ले लेते हैं। कई बार उनका चुनाव उनकी रुचि, क्षमता और योग्यता के अनुरूप नहीं

होता। जिसके कारण वे अपने उद्देश्य से भटक जाते हैं। यही हालात बारहवीं पास करने वाले विद्यार्थियों के साथ भी है, उन्हें भी यह नहीं पता कि विद्यालयी परीक्षा पास करके उन्हें क्या करना है, कहाँ दाखिला लेना है, कौन सा कोर्स ज्वाइन करना है, वे किस नौकरी के लिए योग्य हैं, फार्म कैसे भरना है, भविष्य में उन्हें क्या करना चाहिए, अपनी मंज़िल की ओर किस तरह कदम बढ़ाने चाहियें ? उनके पास भविष्य निर्माण की कोई योजना नहीं होती, अनेक प्रश्न उन्हें कचोटते रहते हैं, वे कोई भी निर्णय लेने में सक्षम नहीं होते। लक्ष्य निर्धारित करते समय वे पेण्डुलम की तरह झूलते रहते हैं।

वैश्वीकरण के इस दौर में जहाँ करियर के अनेक विकल्प उपलब्ध हैं, वहाँ मार्गदर्शन की भी ज्यादा जरूरत है। हरियाणा सरकार विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए निरन्तर प्रयासरत है। अतः सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को अब अपने भविष्य को लेकर ज्यादा चिंतित होने आवश्यकता नहीं है, क्योंकि उनके मन में उठने वाले सभी सवालों के जबाव और करियर चयन सम्बन्धी जानकारी प्रदान करता है:- हरियाणा सरकार का उम्मीद पोर्टल। सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी किसी भी क्षेत्र में पीछे न रहें और उन्हें उचित समय पर उचित मार्गदर्शन मिले, इसके लिए हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग ने उम्मीद करियर और गाइडेंस पोर्टल **उम्मीद** की शुरुआत की है।

बच्चों के सुनहरे सपनों को उड़ान देने हेतु इस पोर्टल की शुरुआत 18 नवम्बर 2020 को हुई, जो उनके जीवन में एक नई उम्मीद और आशा की किरण लेकर आया है। जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने से पहले प्रथम चरण में अध्यापकों को उचित प्रशिक्षण दिया गया तथा हरियाणा के सभी जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों में उम्मीद परामर्श केंद्र भी स्थापित किए गए हैं। डाइट में तैनात परामर्श अधिकारी समय-समय पर

अक्सर हम देखते हैं कि विद्यार्थी अपने संकाय चुनाव और करियर को लेकर उधेड़बुन में रहते हैं। अधिकांश विद्यार्थी अपना लक्ष्य निर्धारित नहीं कर पाते। बारहवीं कक्षा की परीक्षा देने के बाद भी विद्यार्थी दुविधाग्रस्त रहते हैं कि वे कौन से मार्ग का चुनाव करें जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल हो। वे उच्च शिक्षा के लिए आगे किस कोर्स को ज्वाइन करें या किसी नौकरी के लिए प्रयास करें। यह समस्या विज्ञान, कॉमर्स, तथा आर्ट्स संकाय में पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों के साथ है। उनको राह दिखाने वाला कोई नहीं होता। विशेषतौर पर सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समस्या और भी अधिक है। हाँ, अगर घर में पढ़े लिखे अभिभावक हैं तो वे थोडा बहुत मार्गदर्शन कर सकते हैं परन्तु अनेक विद्यार्थी ऐसे हैं जिनके घर में कोई भी गाइड करने वाला नहीं है।

अब सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को तनिक भी चिंतित होने की जरूरत नहीं हैं, उनके सपनों को पूरा करने के लिए उम्मीद करियर पोर्टल नई उम्मीद लेकर आया है। बच्चों को इसका उचित लाभ मिले इस हेतु हमारी डाइट पूरी ऊर्जा और सकारात्मक सोच के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम कर रही है।इसमें कोई शक नहीं कि यह सरकार की यह सराहनीय पहल ग्रामीण और पिछड़े इलाके के विद्यार्थियों के लिए वरदान सिद्ध होगी और उन्हें नई राहें दिखाएगी।अब सरकारी स्कूलों से भी उच्च कोटि के डॉक्टर, इंजीनियर, सफल व्यवसायी, वकील, सैन्य अधिकारी निकलकर आएँगे और समाज में अपनी पहचान बनाने में कामयाब रहेंगे।

कुलदीप दहिया
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
सोनीपत, हरियाणा

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अगर विद्यार्थियों की समस्याओं की बात करें तो सबसे गम्भीर समस्या है, उचित मार्गदर्शन की कमी। सही मार्गदर्शन के अभाव में बहुत सी प्रतिभाएँ दम तोड़ती नजर आती हैं। कई बार विद्यार्थी बिना उचित मार्गदर्शन के आभाव में गलत करियर का चुनाव कर लेते हैं या किसी विशेष व्यक्ति से प्रभावित होकर उनको अपना आदर्श मानते हैं तथा उनके जैसा बनना पसंद करते हैं परन्तु उनके बारे में उन्हें बहुत ही कम जानकारी होती है,जिससे वे रास्ता भटक जाते हैं। अभिभावकों को भी इस सन्दर्भ में उचित जानकारी नहीं होती। जिसके कारण विद्यार्थी अपने भविष्य का उचित चुनाव नहीं कर पाते। ग्लोबलाइजेशन के युग में विद्यार्थियों के सामने बहुत सारे जॉब करियर ऑप्शन्स उपलब्ध हैं, जिससे वे अनभिज्ञ हैं। मेरा मानना है कि अगर सही समय पर उचित मार्गदर्शन किया जाए तो विद्यार्थी निश्चित रूप से अपना भविष्य सँवार सकते हैं। इसी उद्देश्य की पूर्ति एवम विद्यार्थियों के सपनों को पूरा करने हेतु हरियाणा सरकार ने राज्य के सरकारी स्कूलों में पढने वाले विद्यार्थियों के लिए उम्मीद पोर्टल की शुरुआत की है जो एक अच्छी पहल है।सरकारी स्कूलों में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है। यहाँ अनेक अनगढ़ हीरे छुपे हुए हैं। बस आवश्यकता है उनको उचित रूप देने की, उनको तराशने की। यदि उन्हें उचित दिशा निर्देश दिए जाएँ वे किसी भी क्षेत्र में अपनी पताका फहरा सकते हैं। उम्मीद पोर्टल सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के भविष्य को संवारने हेतु अत्यंत लाभदायक सिद्ध होगा और भविष्य निर्माण के नए आयाम स्थापित करेगा।

सरोज बाल्यान
खण्ड शिक्षा अधिकारी
गोहाना, जिला-सोनीपत, हरियाणा

अधीनस्थ विद्यालयों में जाते हैं और विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करते हैं, उनकी शंकाओं का निवारण करते हैं तथा उन्हें प्रेरित करते हैं कि बेहतर करियर कैसे बनाया जाए। उम्मीद पोर्टल पर कैसे रजिस्ट्रेशन करें तथा उसका संचालन किस प्रकार से किया जाए आदि विषयों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की जाती है।

उम्मीद पोर्टल का उद्देश्य है कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु उनका उचित मार्गदर्शन करना और उनमें आदर्श जीवन कौशल विकसित करने में सहायता करना। यह पोर्टल उन्हें शैक्षणिक व परीक्षा के तनाव से निपटने की शक्ति प्रदान करता है तथा उन्हें जीवन में दिन प्रतिदिन आने वाली समस्याओं का प्रभावी ढंग से समाधान करने योग्य बनाता है। विद्यार्थियों को विषय तथा व्यवसाय सम्बन्धी परामर्श देने के साथ-साथ उन्हें भावनात्मक रूप से दृढ़ बनाने का प्रयास किया जाता है। यह उनके सामने अधिक से अधिक विविध करियर विकल्प प्रस्तुत करता है। इस पोर्टल की सहायता से उन्हें सही दिशा प्रदान की जाती है, जिससे वे भविष्य में आसानी

उम्मीद पोर्टल ग्रामीण और पिछड़े इलाके के विद्यार्थियों के लिए हरियाणा सरकार की शानदार पहल है। मेरे स्कूल के शिक्षकों ने यह स्वप्निल योजना क्रियान्वित करने के लिए अथक मेहनत की है, जो बधाई के पात्र हैं। शिक्षक समय-समय पर विद्यार्थियों का करियर चुनाव हेतु मार्गदर्शन करते हैं तथा विद्यालय में करियर और गाइडेंस हेतु सेशन आयोजित किए जाते हैं, जिनमें विद्यार्थी बढ़चढ़कर भाग ले रहे हैं। वे अब अपने भविष्य को लेकर संजीदा हैं। मेरे विद्यालय में पढ़ने वाले दसवीं और बारहवीं के सभी विद्यार्थियों ने उम्मीद पोर्टल पर रजिस्ट्रेशन करवा रखा है और करियर सम्बन्धी जानकारियों का भरपूर फायदा उठा रहे हैं। प्रशिक्षित शिक्षक उनकी करियर सम्बन्धी सभी समस्याओं का समाधान कर रहे हैं। मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि सरकार की यह पहल एक नया इतिहास लिखने जा रही है। एक और बात उम्मीद पोर्टल वास्तव में सार्थक तब सिद्ध होगा, जब विद्यार्थी और शिक्षक इसका उचित उपयोग करेंगे। सभी विद्यार्थी इस पोर्टल पर अपना पंजीकरण करके नियमित रूप से इस पर आने वाने कार्यक्रम और सूचनाएँ देखेंगें तथा शिक्षक भी इस पोर्टल में सक्रिय भागेदारी निभाएँगे।

सुशील बंसल
प्रधानाचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
गढ़ी उजाले खां, जिला-सोनीपत, हरियाणा

से आगे बढ़ सकते हैं। उनके मन पर परीक्षा का भूत भी सवार नहीं रहता और वे परीक्षा में किसी तरह का दबाव महसूस नहीं करते। विद्यार्थियों को बोर्ड तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं का सामना करने के लिए भी उन्हें उचित मार्गदर्शन एवं परामर्श प्रदान किया जाता है। वे भयमुक्त और तनाव रहित परीक्षा देने के लिए मानसिक रूप से सुदृढ हो जाते हैं।

उम्मीद पोर्टल के माध्यम से विद्यार्थियों को चिकित्सा क्षेत्र, पैरामेडिकल, इंजीनियरिंग, कॉमर्स, बैंकिंग, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, भारतीय सेना, एयरफोर्स, नेवी, होटल मैनेजमेंट, कंप्यूटर क्षेत्र, बीमा क्षेत्र, पत्रकारिता आदि के साथ साथ अनेक नवीनतम रोज़गारोन्मुखी कोर्स के बारे में करियर सम्बन्धी विभिन्न जानकारियाँ प्रदान की जाती हैं। विद्यालय के प्रशिक्षित शिक्षक भी समय-समय उन्हें करियर के बारे में दिशा-निर्देश प्रदान करते हैं। विभिन्न क्षेत्रों में अपनी बुलन्दी की पताका फहरा चुके सफल व्यक्ति भी यूट्यूब के माध्यम से अपने विशिष्ट क्षेत्र से सम्बंधित उपयोगी जानकारी विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाते हैं। विशेष क्षेत्र के अनुभवी व्यक्ति उनकी मदद करते हैं। वे अपने ज्ञान, अनुभव, और जीवन-संघर्ष के आधार पर विद्यार्थियों को बताते हैं कि वे किस तरह एक सफल इंसान बन सकते हैं। वे व्यवसाय तथा कार्यक्षेत्र से संबंधित अनेक मुद्दों पर सीधी वार्ता तथा विचार-विमर्श भी करते हैं।

सरकारी स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थी जब दसवीं या बारहवीं कक्षा उत्तीर्ण कर लेंगे तो वे आसानी से अपने करियर का चुनाव कर सकेंगे। भविष्य को लेकर वे तनिक भी चिंतित नहीं होंगे क्योंकि वे उम्मीद परामर्श पोर्टल के माध्यम से पहले ही प्रशिक्षण और कॉउंसलिंग ले चुके हैं। उनके सामने उनकी पसंद, क्षमता, योग्यता तथा रुचि के अनुसार अनेक विकल्प उपलब्ध होंगे। करियर-विकल्प की जानकारी एकत्रित करने के बाद विद्यार्थी अब दिशाहीन होकर अपने करियर का चुनाव नहीं करेंगे। उनका निर्णय किसी दबाव, विवशता, जल्दबाजी या दूसरों की नकल पर आधारित नहीं होगा। वे बिना किसी दुविधा के अपने करियर का चुनाव करेंगे। आत्मविश्वास से लबरेज अब वे अपने हुनर, प्रतिभा और कौशल के आधार पर एक सही रास्ते का चुनाव करेंगे।

उम्मीद पोर्टल के माध्यम से उन्हें अपना लक्ष्य निर्धारित तय करने में मदद मिलेगी। यदि विद्यार्थी को उचित समय पर उचित दिशा मिल जाए तो वह अपने लक्ष्य का उचित चुनाव आसानी से कर सकता है और मजबूती से अर्जुन की तरह लक्ष्य रूपी मछली पर निशाना साध सकता है। एक बार लक्ष्य तय हो जाने के बाद वह उसे प्राप्त करने हेतु अपनी पूरी ताकत झोंक सकता है।

अनेक बार देखा जाता है कि करियर चुनाव के बाद जब काफी समय बीत जाता है तो विद्यार्थियों को एहसास होता है कि वे तो किसी दूसरी जगह जाना चाहते थे, लेकिन गलती से कहीं और चले गए। अब पछताए क्या होत, जब चिड़िया चुग गई खेत कहावत उन पर चरितार्थ होती है, गलत करियर चुनकर वे अपना समय और पैसा

दोनों बर्बाद करते हैं। उम्मीद करियर काउंसलिंग की मदद से अब वे एक सही करियर का चुनाव कर सकते हैं और उन्हें अब पछताना नहीं पड़ेगा, न ही पीछे मुड़कर देखना होगा। उनके जीवन से नकारात्मकता के बादल छँट जाएँगे। उनकी ज़िंदगी में अब सकारात्मक ऊर्जा का संचरण होगा जैसा कि हम जानते हैं कि किसी भी लक्ष्य को हासिल करने के लिए सकारात्मक ऊर्जा का होना बेहद जरूरी है।

कैसे करें पंजीकरण-

विद्यार्थी और शिक्षक निम्नलिखित लिंक पर जाकर उम्मीद पोर्टल में रजिस्टर कर सकते हैं http://bit.ly/umeedcareerportaltraining जब वे उपर्युक्त लिंक पर क्लिक करेंगे तो उनके सामने उम्मीद पोर्टल का होमपेज खुल जाएगा। सबसे पहले उन्हें इस होमपेज पर लॉगिन करना होगा। यदि आप शिक्षक हैं तो आपको स्कूल आईडी दर्ज करनी होगी और यदि आप विद्यार्थी हैं तो आपको एसआरएन (Student Registration Number) दर्ज करना होगा। इसके बाद आपको पासवर्ड दर्ज करना होगा। लॉगिन करने के बाद आप करियर, क्लासिस, परीक्षाएँ, वोकेशनल कोर्स, स्कॉलरशिप आदि से संबंधित जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। यदि विद्यार्थी को अपना एसआरएन नहीं पता है, तो वे अपने शिक्षक या फिर स्कूल मुखिया से संपर्क करके एसआरएन प्राप्त कर सकते हैं। समय-समय पर आयोजित होने वाले ऑनलाइन वेबिनारों में भाग लेने के लिए विद्यार्थी निम्नलखित लिंक पर क्लिक कर सकते हैं- http://bit.ly/umeed career portal webinar

इस पोर्टल पर आयोजित होने वाले वेबिनारों की जानकारी विद्यालय मुखिया और उम्मीद पोर्टल प्रभारी शिक्षकों के पास व्हाटसएप्प के माध्यम से साझा की जाती है।

सरकारी स्कूलों के विद्यार्थी अब अपने करियर को लेकर भ्रमित नहीं रहेंगे। उम्मीद पोर्टल और उनके शिक्षक उनकी हर समस्या का उचित समाधान करने के लिए तत्पर हैं। विद्यार्थी अपनी योग्यता, हुनर, प्रतिभा कौशल और रुचि के आधार पर अपने करियर का चुनाव आसानी से कर सकेंगे। एक सही करियर का चुनाव करके ही विद्यार्थी अपने सपने पूरे कर सकते हैं। ज़िंदगी में वे जो बनना चाहते हैं, बन सकते हैं। यदि विद्यार्थी इस माध्यम का उचित उपयोग करते हैं तो उनका भविष्य उज्ज्वल होगा।

गणित अध्यापिका
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
गढ़ी उजाले खां
खण्ड गोहाना, सोनीपत, हरियाणा

प्रश्न बैंक

प्यारे बच्चो, हम आपसे कुछ प्रश्न पूछेंगे तथा आपने इन प्रश्नों के उत्तर देने हैं और बाद में नीचे दिए गये उत्तरों से मिलान करके अपना मूल्यांकन स्वयं करना है।

प्र.1. रेलगाड़ी संख्या 04722 अबोहर-जोधपुर को किस बीमारी के नाम से जाना जाता है?
क. कैंसर ट्रेन ख. मधुमेह ट्रेन
ग. टीबी ट्रेन घ. लकवा ट्रेन

प्र.2. पूरे भारत देश में कोरोना वैश्विक महामारी के कारण पहला जनता कर्फ्यू किस दिन लगा था?
क. 22 मार्च 2020 ख. 23 मार्च 2020
ग. 24 मार्च 2020 घ. 25 मार्च 2020

प्र.3. भौगोलिक दृष्टि से भारत देश में दक्षिणी-पश्चिमी मानसून की अवधि कितने महीने होती है?
क. 3 माह ख.4 माह ग. 2 माह घ. 1 माह

प्र.4. भारत में ठण्डा मरुस्थल किस केन्द्र शासित प्रदेश में है?
क. लक्षद्वीप ख. लद्दाख
ग. चण्डीगढ़ घ. अण्डेमान निकोबार

प्र.5. भारत में मारूति सुजूकी कार बनाने का पहला कारखाना कहाँ स्थापित हुआ था?
क. डूंडाहेड़ा गुरुग्राम ख. मानेसर गुरुग्राम
ग. बल्लभगढ़ फरीदाबाद घ. कुण्डली सोनीपत

प्र.6. 1 नवम्बर 1966 को हरियाणा किस राज्य से अलग होकर नया राज्य बना था?
क. पंजाब ख. हिमाचल
ग. उत्तर प्रदेश घ. राजस्थान

प्र.7. हरियाणा राज्य की सीमा कौन से केन्द्र शासित प्रदेशों के साथ मिलती है?
क. दादर-नगर हवेली ख. दिल्ली-चण्डीगढ़
ग. अण्डेमान-निकोबार घ. दमन-द्वीप

प्र.8. वर्तमान में हरियाणा के मुख्य मंत्री कौन हैं?
क. श्री मनोहरलाल ख. श्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा
ग. श्री ओमप्रकाश चौटाला घ. राव इन्द्रजीत सिंह

प्र.9. हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड किस जिले में स्थित है?
क. पंचकूला ख. महेन्द्रगढ़
ग. रोहतक घ. भिवानी

प्र.10. दस हजार रन बनाने वाली भारतीय महिला क्रिकेटर खिलाड़ी कौन हैं?
क. मिताली राज ख. पूनम राउत
ग. हरमनप्रीत कौर घ. झूलन गोस्वामी

उत्तर : 1.क 2.क 3.ख 4.ख 5.ख 6.क 7.ख 8.क 9. घ 10.क

- हर्ष कुमार 'गुरु जी'
प्रवक्ता समाज शास्त्र
रावमा विद्यालय, बीकानेर, जिला- रेवाड़ी, हरियाणा

क्रिटिकल एंड क्रिएटिव थिंकिंग

सुरेश राणा

शिक्षा विद्यार्थी को तर्कपूर्ण सोचने-समझने की शक्ति प्रदान करती है तथा उन्हें प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी सोच व क्षमता का प्रयोग करते हुए उचित निर्णय लेने के योग्य बनाती है। अक्सर हम देखते हैं कि विद्यार्थी पाठ्यक्रम आधारित प्रश्नों के रटे रटाये सवालों के जवाब आसानी से दे देते हैं परंतु जब प्रश्न थोड़ा घुमा फिराकर पूछ लिया जाता है या तर्क आधारित होता है तो वे बगलें झाँकने लगते हैं। जब उन्हें सोचने के लिए विवश होना पड़ता है, उत्तर देने के लिए जूझना पड़ता है, मंथन करना पड़ता है तो कई बार उनकी क्षमता जवाब दे देती है। आमतौर पर किसी समस्या का हल निकालने के लिए विद्यार्थी सीधे-सीधे सोचते हुए उस समस्या से मिलती जुलती अन्य परिस्थितियों के अनुसार या याद किए गए उत्तर के मुताबिक किसी न किसी नतीजे पर तो आ जाते हैं, जबकि दैनिक जीवन में आने वाली समस्याओं को सुलझाने के लिए उन्हें एक अलग सोच रखनी होती है क्योंकि न तो उनके पास इन समस्याओं के लिए रटा रटाया जवाब होता है और न ही कोई समान स्थिति तो ऐसी परिस्थिति में उनके काम आती है- क्रिटिकल एंड क्रिएटिव थिंकिंग

जीवन में बेहतर बनने और कुछ प्राप्त करने के लिए हमें उचित निर्णय लेने की जरूरत होती है। जब हम किसी गहन समस्या में फँसे होते हैं तो उस दौरान हमें गहराई से सोचने की क्षमता समस्या से बाहर निकालने में मदद करती है। गहराई से सोचना एक तरह की एक प्रक्रिया है जिसमें हम खुद से प्रश्न करते हैं कि कैसे किसी चीज को चुना जाए, क्या सही है, क्या गलत है? गहराई से सोचने की शक्ति को बढ़ाने के लिए हमें अपने दिमाग में विचारों को बढ़ाने की जरूरत होती है, मंथन करने की आवश्यकता होती है और यह शक्ति आती है क्रिएटिव एंड क्रिटिकल थिंकिंग से।

क्रिटिकल एंड क्रिएटिव थिंकिंग हमें सिखाती है कि हम किसी भी बात पर आँख मूँदकर भरोसा न करें बल्कि पहले उसे अच्छी तरह से समझें, उसके बारे में जरूरी सूचनाएँ एकत्रित करें, फिर ठीक तरह से विश्लेषण करें। उस बात को सत्यता की कसौटी पर कसने के बाद ही उचित निर्णय पर पहुँचे। तर्कपूर्ण ढंग से सोचने वाले व्यक्ति दिए गए तथ्यों में अपनी ओर से कुछ नया जोड़कर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है। वह जब तक इन नए तथ्यों में अपनी ओर से कुछ नहीं जोड़ता अर्थात तथ्यों का सृजन नहीं करता तब तक समस्या का समाधान नहीं हो सकता।

शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने हेतु विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा निरन्तर प्रयासरत है। राजकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के विजन को

अमलीजामा पहनाने के लिए जुलाई-2017 में आरंभ किया गया 'सक्षम हरियाणा' कार्यक्रम अत्यंत कारगर सिद्ध हुआ। यह शिक्षा में गुणवत्ता, शिक्षकों के पढ़ाने के तौर-तरीकों में बदलाव तथा शुरू से ही विद्यार्थियों के सीखने के स्तर की नींव मजबूत करने की दिशा में ऐतिहासिक कदम साबित हुआ। शिक्षा में सुधार लाने का चरणबद्ध सफर सक्षम अभियान से प्रारम्भ हुआ जो सक्षम, सक्षम प्लस तथा सक्षम 2.0 के विभिन्न पड़ावों को पार करते हुए अब आ पहुँचा है क्रिटिकल एंड क्रिएटिव थिंकिंग पर।

सक्षम अभियान के अंतर्गत तीसरी, पाँचवीं और सातवीं कक्षा को शामिल किया गया था, जिसमें विद्यार्थियों का दो विषयों हिंदी और गणित में दक्षता आधारित मूल्यांकन किया गया था। इसके बाद दूसरे चरण में सक्षम प्लस लागू हुआ जिसके अंतर्गत अंग्रेजी विषय को भी शामिल किया गया। सक्षम प्लस के बाद लागू हुआ सक्षम 2.0 जिसके अंतर्गत तीसरी से आठवीं की सभी

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग गुणवत्तापरक शिक्षा देने के लिए निरंतर प्रयासरत है। स्कूली शिक्षा में सार्थक बदलाव लाने हेतु सक्षम कार्यक्रम की सफलता के बाद क्रिटिकल एंड क्रिएटिव थिंकिंग प्रोग्राम लागू किया गया है, जो विद्यार्थियों में सोचने, तर्क करने और सर्जनात्मक शक्ति को विकसित करेगा। कोविड-19 की विभीषिका के दौरान यह कार्यक्रम हरियाणा के 24 सक्षम खण्डों में लागू किया गया है। इस कार्यक्रम की सफलता के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, डाइट, खंड कोर टीम, शिक्षक सभी मिलकर एक इकाई के रूप में कार्य कर रहे हैं। एससीईआरटी द्वारा कोर टीम के मार्गदर्शन के लिए ओरिएंटेशन प्रोग्राम और रिव्यु बैठकें निरन्तर आयोजित की जा रही हैं, जिनमें सीसीटी की अवधारणा, प्रश्नों का निर्माण और इसका क्रियान्वयन शामिल है। इन ऑनलाइन बैठकों और ओरिएंटेशन कार्यक्रमों में जिले के अधिकारी, खंड के अधिकारी, कोर टीम के सदस्य तथा शिक्षक सीधे तौर पर जुड़कर संवाद करते हैं। जैसा कि हम जानते हैं, शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षाएँ उत्तीर्ण करना नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास करती है। सीसीटी आधारित शिक्षण का विद्यार्थी जीवन में खास महत्त्व है, यह सिर्फ स्कूली जीवन में ही नहीं बल्कि भविष्य में निजी और व्यावसायिक जीवन में भी काम आएगी। विद्यार्थी स्पष्ट और व्यवस्थित तरीके से सोचना सीखेंगे और समस्या का उचित समाधान करेंगे।

सुरेंद्र सिंह सिंधु
नोडल अधिकारी
क्रिएटिव एंड क्रिटिकल थिंकिंग
राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, गुरुग्राम, हरियाणा

सक्षम कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने में सफल रहा, जिसके अंतर्गत कक्षा तीसरी, पाँचवीं तथा सातवीं के 80 प्रतिशत विद्यार्थियों को 60 प्रतिशत अंक लेकर खुद को सक्षम साबित करना था। सीसीटी उन्हीं खण्डों में लागू किया गया है, जो खण्ड 2.0 में सक्षम हुआ था। मेरा खण्ड गोहाना भी इस कार्यक्रम का एक हिस्सा है जहाँ सीसीटी लागू किया गया है।

बच्चे अपने आसपास की सभी वस्तुओं को देखते हैं, छूते हैं और उन्हें काम में लाते हैं। बच्चा बचपन से ही इन वस्तुओं को देखता है, पहचानता है। वह बेलन बचपन से देखता रहा है और गेंद से वह लगातार खेलता आ रहा है, वह छोटी प्लेट और कटोरी भी उठा रहा है। यदि हम बच्चे को क्षेत्रफल, आयतन और परिमाप इन वास्तविक वस्तुओं से समझाएँगे तो यह ज्ञान यथार्थ होगा।

सीसीटी का उद्देश्य बच्चों को रट्टा प्रणाली से बाहर निकालकर उसे दैनिक जीवन से जोड़ते हुए अधिगम करवाना है। मेरा सौभाग्य है कि मैं इस महत्त्वाकांक्षी मिशन से जुड़ी हुई हूँ। मैंने सीसीटी को एक चुनौती के रूप में लिया है, जिसका मैं भरपूर आनन्द ले रही हूँ। हमारी कोर टीम के सीसीटी आधारित प्रश्नों का निर्माण करने में दक्ष है तथा सब मिलकर कार्य कर रहे हैं। आशा है यह कदम शिक्षा में अनेक बदलाव लेकर आएगा।

सुमन
शिक्षिका
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
गढ़ी उजाले खां, जिला-सोनीपत, हरियाणा

कक्षाओं को शामिल किया गया जिसमें कक्षा तीसरी से पाँचवी के हिंदी, गणित, परिवेश अध्ययन तथा कक्षा छठी से आठवीं में हिंदी, गणित, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान विषय शामिल किए गए थे।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि सक्षम कार्यक्रम का उद्देश्य था, विद्यार्थियों को दक्ष बनाना। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों और शिक्षकों में एक नई उमंग और तरंग लेकर आया है, जिससे न केवल विद्यार्थी को ग्रेड लेवल आधारित दक्षताओं में सक्षम बनाया गया, अपितु शिक्षक को भी दक्षता आधारित शिक्षण के लिए प्रेरित किया गया। सक्षम कार्यक्रम ने लगभग दो वर्षों में ही शिक्षकों की कर्मठता और समर्पण के साथ अधिकारियों के उचित मार्गदर्शन तथा प्रेरणा से शिक्षा के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित किए। शिक्षक जुनून के साथ शिक्षा का स्तर सुधारने हेतु तल्लीनता के साथ जुटे रहे। उन्होंने न केवल अतिरिक्त कक्षाएँ आयोजित करके अध्यापन कार्य करवाया, अपितु अवकाश के दिनों में भी कक्षाएँ लगाकर विद्यार्थियों की दक्षताओं पर कार्य किया। सक्षम कार्यक्रम से शिक्षकों की सोच और पढ़ाने के तरीके में बहुत बदलाव आया। उन्होंने पारम्परिक तरीके से हटकर दक्षता आधारित शिक्षण को अपनाना प्रारम्भ किया।

सक्षम कार्यक्रम के अंतर्गत सक्षम घोषणा 2.0 राउंड 2 को दो भागों में लागू किया गया। 14/15 फरवरी, 2020 को 60 खण्डों तथा 28/29, फरवरी को 59 खण्डों में कक्षा तीन से आठवीं के गणित, परिवेश अध्ययन, विज्ञान, एवं सामाजिक विज्ञान विषयों का दक्षता आधारित मूल्यांकन करने के बाद 24 खंड सभी ग्रेड में सक्षम घोषित किए गए। हरियाणा सरकार के इस क्रांतिकारी मिशन की चहुँ ओर प्रशंसा की गई।श्रीमती अनिता करवाल, सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा भी शिक्षा में गुणवत्ता आधारित सुधार लाने के इस प्रयास की सराहना की।

दक्षता आधारित मूल्यांकन की सफलता के बाद हरियाणा सरकार एक और पायदान आगे बढ़ रही है। कोरोना काल की विभीषिका के बाद ज्यों ही विद्यालय खुलेंगे तो क्रिटिकल एंड क्रिएटिव थिंकिंग (सीसीटी) आधारित मूल्यांकन के लिए विभाग अपनी कमर कस चुका है। यह कार्यक्रम हरियाणा के चुने सक्षम 24 खण्डों में लागू होगा जो खण्ड सक्षम 2.0 में सक्षम हुए हैं। इसमें केंद्रीय विद्यालय शिक्षा बोर्ड(सीबीएसई) द्वारा क्रिटिकल एंड क्रिएटिव थिंकिंग आधारित परीक्षा का संचालन किया जाएगा। इस परीक्षा में कक्षा सातवीं, आठवीं तथा नौवीं के हिंदी, गणित और विज्ञान विषयों का मूल्यांकन होगा। जिससे शिक्षकों को यह पता चलेगा कि उनके विद्यार्थी चुनौतीपूर्ण प्रश्नों का सामना किस तरह से करते हैं और चुनौतीपूर्ण प्रश्नों के मूल्यांकन हेतु किस प्रकार तैयारी करते हैं। क्रिटिकल एंड क्रिएटिव

थिंकिंग आधारित शिक्षण में तर्क-वितर्क आधारित प्रश्नों को शामिल किया जाएगा जिनका हल निकालते समय विद्यार्थियों को प्रश्न में दर्शाई गई स्थिति का सभी तरीकों से विश्लेषण करना होगा और उसे वास्तविक जीवन से जोड़ते हुए उचित नतीजे तक पहुँचना होगा। इसका संबंध किताबी ज्ञान से नहीं बल्कि जिंदगी के अनुभवों और भावनाओं पर आधारित होगा। ये प्रश्न विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से जुड़े होंगे जो उन्हें विभिन्न तरीकों से सोचने के अवसर प्रदान करेंगे तथा उनका हल निकालने के लिए उन्हें जूझने के लिए प्रेरित करेंगे।

क्रिएटिव एंड क्रिटिकल थिंकिंग शिक्षा में गुणात्मक सुधारों में सक्षम घोषणा का अगला चरण है। सक्षम घोषणा में कक्षा तीसरी से आठवीं को शामिल किया गया था तथा इसमें कक्षा सातवीं, आठवीं और नौवीं शामिल होंगी। यदि हम विषयों की बात करें तो सक्षम घोषणा में हिंदी, गणित, परिवेश अध्ययन, विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान विषय शामिल गए थे तो सीसीटी में हिंदी, गणित और विज्ञान विषयों को शामिल किया गया है। जहाँ सक्षम घोषणा में दक्षता आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न शामिल किए गए थे, वहीं सीसीटी में वास्तविक जीवन से जुड़े हुए वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के साथ-साथ सब्जेक्टिव प्रश्नों पर आधारित मूल्यांकन किया जाएगा, जिनका उत्तर प्रायः सौ शब्दों से अधिक शब्दों में लिखना होगा।

शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों को सीसीटी परीक्षा की तैयारी के लिए क्रिटिकल और क्रिएटिव थिंकिंग आधारित प्रश्न विद्यार्थियों को अभ्यास हेतु निरन्तर उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।अभ्यास के लिए पठनीय सामग्री और सम्बंधित सन्दर्भ सामग्री प्रदान की जाती है जिसमें चित्र, चार्ट्स और ग्राफ्स भी शामिल रहते हैं। हरियाणा में क्रिटिकल और क्रिएटिव का क्रियान्वयन चरणबद्ध तरीके से गया है। सबसे पहले खण्ड स्तर पर शिक्षकों की एक कोर टीम गठित की गई है, जो सीसीटी आधारित प्रश्नों का निर्माण करती है। इस कोर टीम के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् हरियाणा, गुरुग्राम द्वारा ओरिएंटेशन कार्यक्रम आयोजित किए गए। खण्ड स्तरीय कोर टीम द्वारा शिक्षकों का मार्गदर्शन किया गया। वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से एससीईआरटी गुरुग्राम द्वारा इस कार्यक्रम की लगातार मॉनिटरिंग की जा रही है। खण्ड स्तर पर कोर टीम के व्हाट्सएप्प समूह बनाये गए हैं जो निरन्तर विद्यार्थियों के लिए संसाधन सामग्री भेज रहे हैं। सवाल किस पाठ्यक्रम में से पूछे जाएँगे, इसके लिए एस सी ई आर टी द्वारा सिलेबस साझा किया गया है। इसके बाद निर्धारित पाठ्यक्रम में से कोर टीम ने सीसीटी आधारित प्रश्नों का निर्माण किया, जिन्हें रिव्यु हेतु जिला शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्थान को भेजा गया। डाइट ने इन प्रश्नों को रिव्यु करके एससीईआरटी को भेजा इसके बाद एस सी ई आर टी ने प्रश्नों को रिव्यु करके फीडबैक दिया। इस प्रकार से क्रिटिकल और क्रिएटिव थिंकिंग कार्यक्रम को सफल बनाने में शिक्षक, संकुल स्तरीय टीम खण्ड स्तरीय कोर टीम, जिला डाइट की टीम और एससीईआरटी गुरुग्राम की टीम कोरोना को हराते हुए जी जान से जुटी हुई है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि इस कार्यक्रम की सफलता के आशातीत परिणाम सामने आएँगे और शिक्षा में गुणात्मक सुधारों में विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा की यह पहल मील का पत्थर साबित होगी।

जैसा कि हम जानते हैं कि रट्टा आधारित शिक्षण प्रणाली विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास नहीं कर पाती। वह विकट परिस्थितियों में उचित निर्णय लेने में असमर्थ रहता है। अतः क्रिटिकल और क्रिएटिव थिंकिंग उन्हें सही गलत का पता लगाने, उनके विचारों और विश्वासों को सूचनात्मक और तथ्यात्मक मजबूती प्रदान करने, अच्छे निर्णय लेने और चीजों को ठीक ढंग से समझने के लिए बहुत जरूरी है। इसलिए इसे विद्यार्थियों में विकसित करना होगा। वैश्वीकरण, तकनीकी और मोबाइल के युग में विद्यार्थी अपने वातावरण से जुड़ना भूल गए हैं, जिससे उनके सोचने और काम करने और निर्णय लेने के तरीकों पर भी असर पड़ रहा है। अतः आवश्यकता है कि विद्यार्थी अपने आस पास की चीजों पर गौर करें उनका निरीक्षण करें और उनसे सीखें, यह सब क्रिएटिव एंड क्रिटिकल थिंकिंग द्वारा ही सम्भव है।

हिंदी प्राध्यापिका
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
कमालपुर, जिला-कैथल, हरियाणा

सक्षम की कामयाबी के बाद शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने के लिए क्रिटिकल एंड क्रिएटिव थिंकिंग कार्यक्रम यानी सीसीटी कैथल जिले के सक्षम खण्ड राजौंद में लागू किया गया है। इसे उचित ढंग से क्रियान्वित करने के जिला शैक्षिक एवं प्रशिक्षण, कैथल की टीम, खण्ड राजौंद की कोर टीम, संकुल स्तरीय टीम और शिक्षक कड़ी मेहनत से लगे हुए हैं। विद्यार्थियों तक उचित अभ्यास सामग्री मोबाइल के माध्यम से पहुँचाई जा रही है, जिसकी फीडबैक निरन्तर ली जा रही है। डाइट लगातार इस विषय में ऑनलाइन और ऑफलाइन बैठकें आयोजित कर रही है जिनमें सीसीटी आधारित संसाधन अभ्यास सामग्री पर चर्चा की जाती है और शिक्षकों को प्रेरित किया जा रहा है। दैनिक जीवन से जुड़े हुए समस्या आधारित प्रश्न गढ़ने में खंड राजौंद के शिक्षक पारंगत हो चुके हैं। कोरोना की विभीषिका के बाद विद्यालयों में लम्बे समय के बाद विद्यार्थियों की जब चहल-कदमी होगी तो शिक्षक अपने विद्यार्थियों से कक्षा में सीसीटी मूल्यांकन आधारित सामग्री का अभ्यास करवाएँगे। पूर्ण विश्वास है कि इस मिशन में भी खंड राजौंद नए आयाम स्थापित करेगा

सुदेश सिवाच
प्रधानाचार्या
जिला शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्थान
कैथल, हरियाणा

एक जीवंत विद्यालय : रावमावि कापड़ीवास

सत्यवीर नाहड़िया

विद्यालय एवं समाज एक दूसरे के पूरक होते हैं। विद्यालय को लघु समाज भी कहा जाता है। यदि टीम वर्क से विद्यालय में निरंतर सुधार के प्रयास किए जाएँ, तो न केवल इसकी दशा व दिशा बदलती है, अपितु ऐसा संस्थान निरंतर निखरता चला जाता है। रेवाड़ी जिले के गाँव कापड़ीवास के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पर यह पहलू पूरी तरह चरितार्थ होता है, जिसके चलते यह जीवंत विद्यालय प्राचार्य की प्रेरक अगवाई, शिक्षकों के समर्पण, अभिभावकों के सहयोग, विद्यार्थियों की मेहनत तथा समाजसेवियों के प्रोत्साहन से निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर है।

विद्यालय के मनोहारी कैंपस का अंदाजा इस पहलू से लगाया जा सकता है कि शिक्षा विभाग की मुख्यमंत्री विद्यालय सौंदर्यकरण योजना में विद्यालय जिलेभर में विजेता रह चुका है। विद्यालय में बहुआयामी गुणात्मक सुधार के चलते छात्र संख्या में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है। वर्ष 2017-18 में इस विद्यालय में 368 विद्यार्थी अध्ययनरत थे, वहीं 2018-19 में यह संख्या 430 हो गई। वर्ष 2019-20 में छात्र संख्या बढ़कर जहाँ 486 हुई, वहीं 2020- 21 में यह संख्या 500 को पार कर गई। प्रतिवर्ष बोर्ड कक्षाओं का परीक्षा परिणाम गुणात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट रहना विद्यालय की साधना का प्रतिफल है। विद्यालय के प्रतियोगी माहौल के चलते यहाँ सुपर-100, नवोदय विद्यालय, एनएमएमएस आदि प्रतियोगी परीक्षाओं में प्रतिवर्ष विद्यार्थियों का चयन होता आ रहा है। विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास के लिए समर्पित इस विद्यालय की युवा संसद राज्य भर में सर्वश्रेष्ठ रही है। इतना ही नहीं राष्ट्रीय मतदाता दिवस, विज्ञान प्रदर्शनी, कानूनी साक्षरता प्रतियोगिता में विद्यालय अनेक अवसरों पर जिले भर में सर्वश्रेष्ठ रहा है।

विद्यालय में स्थापित सौर ऊर्जा के बीस किलो वाट संयंत्र के चलते 24 घंटे बिजली मुहैया रहती है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के साथ सूचना क्रांति के इस दौर में विद्यालय कदमताल कर रहा है। टेबलैब में जहाँ छठी से आठवीं के विद्यार्थी गणित, हिंदी तथा अंग्रेजी का अध्ययन करते हैं, वहीं नवीं से बारहवीं कक्षा के विद्यार्थी इसी प्रारूप से ऑनलाइन तैयारी भी करते हैं। इतना ही नहीं छठी से आठवीं के विद्यार्थियों के लिए अलग से साइंस सेंटर विकसित किया गया है ताकि विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा किया जा सके। विद्यालय की सभी प्रयोगशालाओं का सदैव वर्किंग मोड पर रहना, गाँव तथा सामाजिक कार्यकर्ताओं का रचनात्मक सहयोग मिलना आदि विद्यालय की अतिरिक्त विशेषताएँ हैं।

यह विद्यालय शैक्षणिक, सांस्कृतिक गतिविधियों के अलावा खेलकूद में भी जिले में अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। विद्यालय की खो-खो व कबड्डी की टीमें जिला स्तर पर कई बार छाप छोड़ चुकी हैं। विद्यालय के कुशल प्रबंधन के चलते जिला प्रशासन एवं शिक्षा विभाग अनेक जिलास्तरीय कार्यक्रमों का सफल आयोजन इस विद्यालय परिसर में कर चुके हैं, जिनमें जिला स्तरीय मेगा साइंस फेयर, विज्ञान प्रदर्शनी तथा कोविड-सेंटर के पक्ष उल्लेखनीय हैं।

राज्य शिक्षक पुरस्कार से अलंकृत विद्यालय के प्राचार्य देशराज शर्मा का मानना है कि कर्तव्यों के प्रति संजीदगी, छात्रोन्मुखी माहौल, बहुआयामी रचनात्मकता तथा निरंतर साधना से सरकारी स्कूलों को सर्वश्रेष्ठ बनाया जा सकता है। वे मानते हैं कि हर छात्र में प्रतिभा होती है, हर शिक्षक में कुछ विशेष खूबी होती है, इन सब को पहचान कर विद्यालय में रचनात्मकता बढ़ाई जा सकती है।

प्राध्यापक, रसायनशास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोरी,
जिला-रेवाड़ी, हरियाणा

प्राध्यापक चावला होंगे सम्मानित

28 शिक्षकों को मिलेगा शिक्षा में नवीन प्रयोगों के लिए राष्ट्रीय अवार्ड

एनसीईआरटी नई दिल्ली के अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा वर्ष 2019-20 हेतु स्कूलों के लिए शिक्षा में नवीन प्रथाओं और प्रयोगों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार हेतु 2 से 3 मार्च 2021 तक ऑनलाइन मोड़ में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। इस राष्ट्रीय संगोष्ठी हेतु पूरे भारत के स्कूलों और शिक्षक शिक्षा संस्थानों से 28 प्रतिभागियों का चयन किया गया था। हरियाणा के डॉ.विजय कुमार चावला ने इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में शिरकत करते हुए अपनी प्रोजेक्ट रिपोर्ट की प्रस्तुति दी थी।

चावला ने बताया कि एनसीईआरटी नई दिल्ली के अध्यापक शिक्षा विभाग द्वारा उन्हें सूचना मिली है कि उन्हें शिक्षा में नवीन प्रथाओं और प्रयोगों के लिए राष्ट्रीय अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। डॉ. विजय चावला ने बताया कि एनसीईआरटी नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2019-20 हेतु विद्यालयों व संस्थाओं में शिक्षण के क्षेत्र में नवाचारी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए संस्थाओं व विद्यालयों से प्रोजेक्ट प्रपोजल आमंत्रित किए थे। उनके द्वारा प्रोजेक्ट रिपोर्ट शीर्षक- कक्षा-कक्ष में हिन्दी भाषा शिक्षण को रुचिकर व आनंददायक बनाने हेतु नवाचारी शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण व उसका क्रियान्वयन क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान, अजमेर भेजी गयी थी। वर्ष 2019-20 के लिए उनका परियोजना प्रस्ताव राष्ट्रीय नवाचारी अवार्ड के लिए चुना गया था। इसके उपरांत उन्होंने एनसीईआरटी नई दिल्ली के अध्यापक शिक्षा विभाग में अपनी प्रोजेक्ट रिपोर्ट भेज दी थी।

इस प्रस्तुति में उनके द्वारा विद्यालय में वर्ष 2019-20 के दौरान हिन्दी भाषा शिक्षण के क्षेत्र में किए गए नवाचारी प्रयोगों का ब्योरा सिलसिलेवार प्रस्तुत किया गया था। उन्होंने कक्षा-कक्ष में हिन्दी भाषा शिक्षण को रुचिकर व आनंददायक बनाने हेतु नवाचारी शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण व उसका क्रियान्वयन शीर्षक को लेकर जो प्रस्ताव भेजे थे, उन्हें तैयार करके विद्यालय में लागू किया गया। उन्होंने बच्चों को खेल-खेल में हिन्दी भाषा सिखाने के लिए 15 खेल तैयार किए और उन्हें विद्यालय में लागू भी किया। इसके अतिरिक्त पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर हिन्दी ई-व्याकरण भी तैयार की गई। चावला ने बताया कि राष्ट्रीय स्तर पर उनके कार्यों को पहचान मिलना उनके लिए गौरव का विषय है।

-शिक्षा सारथी डेस्क

भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाना चाहती है छात्रा ईशा

शहीद बलबीर सिंह राजकीय आदर्श सांस्कृतिक वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय इस्माइलाबाद कुरुक्षेत्र की कक्षा नौवीं में पढ़ने वाली छात्रा ईशा गोस्वामी बहुमुखी प्रतिभा की धनी है। ईशा जहाँ अपनी कक्षा व विद्यालय में सर्वोपरि रहती है वहीं सांस्कृतिक गतिविधियों, कलात्मक प्रतियोगिताओं में पूरी ऊर्जा व उत्साह के साथ भाग लेती है तथा उसके बेहतर परिणाम भी रहते हैं। यात्राओं में रुचि रखने वाली ये बाल कलाकार, मेहँदी, पेंटिंग, रंगोली, नृत्य में अपनी कला का श्रेष्ठ प्रदर्शन करती रहती है। इस छात्रा ने यात्रा वृतांत लेखन, पेंटिंग, एकल व समूह नृत्य में अनेक इनाम जीते हैं। नृत्य के साथ-साथ एक्टिंग में भी राज्य स्तरीय पुरस्कार जीते हैं। यात्रा लेखन में राज्य स्तर पर प्रथम रह चुकी है। जब ये नृत्य करती है तो देखने वाले ईशा की मन से प्रशंसा करते हैं। नृत्य में इसका एक-एक स्टैप नृत्य में जान डाल देता है। एड़ियों की धनक, पूरे शरीर की थिरकन, भाव भंगिमाएँ, पायल की झंकार, सब संगीत के साथ गज़ब का समन्वय बनाते हुए नृत्य में जान डालती है। ईशा का कहना है कि जब मैं कोई संगीत सुनती हूँ तो मेरे पाँव अपने आप थिरकने लग जाते हैं। जोश भरे संगीत के आगे मैं खुद को रोक नहीं पाती। मेरा डांस करने को दिल करता है। ईशा का कहना है कि जब मैं छठी कक्षा में थी तभी से मैंने नृत्य शुरू कर दिया था। मेरे शिक्षकों ने मेरा मार्गदर्शन किया तथा माता सरोज बाला, पिता महिन्द्र पाल ने पूरा सहयोग तथा आशीर्वाद दिया। हमारी मैडम रेखा तथा प्रचार्य अजब सिंह सांगवान का सहयोग बराबर बना रहता है। एक किसान की बेटी ईशा का लक्ष्य आईएएस अधिकारी बनकर समाज में सुव्यवस्था कायम करना तथा लोगों के साथ न्याय करने का है। ईशा ने कहा कि मैं अपने समाज व देश के लिए कुछ अच्छा करना चाहती हूँ। शिक्षा विभाग के कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने कहा कि ईशा जैसी होनहार, प्रतिभावान बेटियाँ समाज के लिए बेहतरीन परिवर्तन लाने की क्षमता रखती हैं। हमें ईशा पर गर्व होना चाहिये।

-डॉ. ओमप्रकाश कादयान
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
एमपी रोही, फतेहाबाद, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

प्रश्न-1. भारतीय सेना के तीन अंग कौन-कौन से हैं?
उत्तर- थल सेना, वायुसेना, नौसेना
प्रश्न-2. हमारे राष्ट्रपिता कौन हैं?
उत्तर- महात्मा गांधी
प्रश्न-3. महात्मा गांधी का पूरा नाम क्या है?
उत्तर- मोहनदास करमचंद गांधी
प्रश्न-4. हमारे देश के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे?
उत्तर- डॉ.राजेन्द्र प्रसाद
प्रश्न-5. हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री कौन थे?
उत्तर- पंडित जवाहरलाल नेहरू
प्रश्न-6. हमारा राष्ट्रगान कौन सा है?
उत्तर- जन-गण-मन अधिनायक जय हे
प्रश्न-7. हमारा राष्ट्रगीत कौन सा है?
उत्तर- वंदे-मातरम्
प्रश्न-8. फलों का राजा किस फल को कहते हैं?
उत्तर- आम को
प्रश्न-9. स्टैच्यू ऑफ यूनिटी कहाँ पर है?
उत्तर- अहमदाबाद में
प्रश्न-10. गेटवे ऑफ इंडिया कहाँ है?
उत्तर- मुंबई में

आश्चर्यजनक परंतु सत्य

- एक ड्रैगनफ्लाई का जीवन 24 घंटों का होता है।
- जिराफ की जीभ 18 इंच तक लंबी हो सकती है।
- चीटियाँ अपने वज़न से 50 गुणा ज्यादा वजन उठा सकती हैं।
- गिरगिट एक समय में अपनी दोनों आँखों को अलग-अलग दिशाओं में घुमा सकता है।
- चीटियाँ कभी नहीं सोतीं।

अमरूद

फलों में मशहूर अमरूद।
स्वाद से भरपूर अमरूद।।
कच्चा हरा पक्का पीला।
होता है बड़ा रसीला।।
दिखता सुखद गोल गोल।
लगता आकर्षक अनमोल।।
इसमें खनिज जल प्रोटीन।
कार्बोहाइड्रेट और विटामिन।।
मिटती इससे फौरन भूख।
मिलता इससे पाचन सुख।।
औषधि युक्त न्यारा फल।
हम बच्चों का प्यारा फल।।

टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला
व्याख्याता अंग्रेज़ी
शासकीय उच्चतर माध्यमिक
विद्यालय घोटिया
घोटिया-बालोद, छत्तीसगढ़

पहेलियाँ

1. तीन भुजा इतराती आयीं,
जुड़ कर बच्चो क्या कहलाईं,
तीन कोण भी बच्चो उसमें,
तीन शीर्ष है उस आकृति में।

2.सर्दी आये मुझको पाओ,
सर्दी-जुकाम सब दूर भगाओ,
अंग्रेज़ों की खोज निराली,
चुस्ती फुर्ती देने वाली।

3.चार खंभे दिखे समान,
उनके बीच के कोण समान,
90 अंश के कोण बनाते,
बोलो बच्चो क्या कहलाते।

4. तीन नदियों का मेल निराला
उससे निकली न्यारी धारा
उस धारा का नाम बताओ
तभी बच्चो टॉफी पाओ।

5.जाड़ों में सब पास बुलाते,
गरमी में सब दूर भगाते,
दो अक्षर का मेरा नाम,
पहनने के मैं आता काम।

6.धूप कड़ी हो या बरसात,
रखना मुझको हरदम साथ,
इन से सदा बचाऊँगा,
काम तुम्हारे आऊँगा।

उत्तर- 1.त्रिभुज 2.चाय 3.वर्ग 4.संगम 5.कोट 6.छाता

डॉ. कमलेंद्र कुमार श्रीवास्तव
रॉवगंज कालपी जालौन
उत्तर प्रदेश

बचिए जानलेवा कोरोना से

बच्चो तुम बेवजह बाहर न जाना,
बाहर घात लगाए बैठा है कोरोना।

मास्क लगाना, बार-बार से साबुन से हाथ भी धोना,
एक दूसरे से दो गज की दूरी भी रखना।

करना रोज सुबह थोड़ा योग और प्राणायाम,
पीना गर्म पानी, करना ठंडी चीजों को दूर से ही राम-राम ।

पढ़ना मन लगाकर पर मोबाइल की लत न लगने देना,
मम्मी-पापा से भी है तुम्हें बहुत कुछ सीखना।

मोबाइल के खेलों से तुम बचकर रहना,
खेलकर सॉप सीढ़ी, लूडो जैसे खेल अपना मन बहलाना।

फिर से लगेंगे स्कूल, फिर से बजेंगी घंटियाँ,
जाएगा कोरोना, जीतेंगे हम, बस कुछ ही तो हैं घड़ियाँ।
कुछ ही तो हैं घड़ियाँ।

कृष्ण कुमार पुनिया
जेबीटी अध्यापक
राप्रा पाठशाला लिसान, जिला- रेवाड़ी, हरियाणा

खरबूजे

गोल मटोल धारी वाले
आए हैं खरबूजे।
गली-मुहल्ले बीच बाजार,
छाए हैं खरबूजे।
सुन गर्मी की आहट पहले,
दौड़ लगाते सारे।
फैला खुशबू घर आँगन में,
लगते प्यारे-प्यारे।
दुनिया में पहचान निराली,
लाए हैं खरबूजे।
गोल-मटोल धारी वाले,
आए हैं खरबूजे।
छोटी बेल पर फल बड़े ये,
मंद-मंद मुस्काते।
भीतर से लगते सुंदर ये,
बच्चों के मन भाते।
दादा-दादी को भी ज्यादा,
भाए हैं खरबूजे।
गोल-मटोल धारी वाले,
आए हैं खरबूजे।

गोविन्द भारद्वाज
पितृकृपा, 4/254, बी-ब्लॉक
हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी पंचशील
अजमेर, राजस्थान

दाँतों और हड्डियों के लिए अत्यावश्यक है विटामिन डी

प्यारे बच्चो! क्या आप जानते हैं कि विटामिन डी वसा घुलनशील विटामिन है? इसका रासायनिक नाम कैलसिफेरोल है। ये विटामिन हड्डियों व दाँतों के स्वस्थ रखने में अहम भूमिका निभाता है। यही विटामिन शरीर को कैल्शियम व मैग्नेशीयम को अवशोषित करने योग्य बनाता है। यदि विटामिन डी की कमी होती है तो शरीर कैल्शियम व मैग्नेशीयम को अवशोषित नहीं कर पायेगा। मस्तिष्क व प्रतिरक्षा तंत्र भी अपने कार्य को सुचारु रूप से करने के लिए इसी विटामिन पर निर्भर करते हैं। इसकी कमी से मोटापा, हाइपरटेंशन, मधुमेह व ऑर्थराइटस रोग हो सकता है। आप को जानकर ये हैरानी होगी कि विटामिन डी की कमी से कैंसर तक होने की आशंका बनी रहती है। वास्तविकता ये है कि हम शरीर मे विटामिन डी की कमी के लिए स्वयं जिम्मेदार हैं। कुछ लोग सारा दिन एसी कमरों में बैठे रहते हैं। धूप में तो पल भर भी नहीं बैठते। विटामिन डी को सनशाइन विटामिन भी कहते हैं। क्यों कहते हैं? इस बात को आप आसानी से समझ सकते हो। दरअसल विटामिन डी हमारे शरीर में ही बनता है। हम 10 प्रतिशत विटामिन डी अपने खाने में लेते हैं। बाकी का 90 प्रतिशत हमारा शरीर स्वयं बनाता है। दरअसल विटामिन वे होते हैं जिन्हें हमारा शरीर बना नहीं सकता और हमें बाहर से मतलब अपने भोजन में लेने पड़ते हैं। विटामिन डी को यदि हम पूर्व हार्मोन कहें तो बेहतर होगा। शरीर इसे हार्मोन के रूप में बदलता है। हम जानते ही हैं कि हार्मोन शरीर में ही बनते हैं तथा संदेशवाहक का कार्य करते हैं। रक्त इन्हें कोशिकाओं तक ले जाता है, वहाँ ये विभिन्न कार्य करते हैं जैसे प्रोटीन संश्लेषण। मशरूम, दूध, दूध उत्पाद, अखरोट व बादाम विटामिन डी के स्रोत हैं। साथ ही सप्ताह में तीन-चार बार कुछ देरी के लिए धूप में भी बैठना चाहिए।

सुनील अरोरा
पीजीटी रसायन विज्ञान
सार्थक राआवमा विद्यालय
सैक्टर-12ए, पंचकूला, हरियाणा

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व प्यारे विद्यार्थियो! अगर विज्ञान विषय खेल-खेल में सीख लें और हम अपने लिए कुछ खिलौने भी बना लें तो हमारी मेहनत का दुगुना फायदा हो जायेगा। इस बार देश में एक अनूठी प्रतियोगिता आयोजित करवाई गई थी जिसमें हमें विभिन्न खिलौने डिजाइन करने या बनाने थे। इस प्रतियोगिता में हम ऐसे खिलौने बना सकते हैं जिससे हम खेल सकें और उसमें लागू विज्ञान को भी जान सकें। इस शृंखला की अधिकांश गतिविधियाँ इसी उद्देश्य को पूरा करती हैं। तभी इस शृंखला का नाम 'खेल-खेल में विज्ञान' रखा गया है। आओ अबसे हम प्रत्येक कड़ी में इस उद्देश्य को पूरा करती कुछ नई विज्ञान गतिविधियों को शामिल करते हैं-

1.अँगूठी/छल्ले का ऊपर चढ़ना-

ये क्या? बाल बाँधने के लिए लगाए जाने वाले रबर बैंड के टुकड़े पर धातु की अँगूठी/छल्ला गुरुत्व बल के विपरीत ऊपर चढ़ा जा रहा है। ये कैसे? ये कैसे? यह गतिविधि जब विद्यार्थियों को करके दिखायी जा रही थी तो एक बालक बोला, सर! यहाँ तो गुरुत्व का नियम फेल हो रहा है। तब उन्हें बताया गया कि गुरुत्व का नियम फेल हो गया, ये बता कर सनसनी फैलाने वाली बहुत सी ऐसी ट्रिक्स होती हैं जिनसे एन्टी ग्रेविटी के खेल/खिलौने बनाये जाते हैं, लेकिन गुरुत्व बल थोड़े ही फेल हो सकता है।

एक बड़ी रबड़ बैंड लो। उसे कहीं से भी काट दो। यह एक टुकड़ा बन जायेगा। इसमे एक अँगूठी या छल्ला पिरो लें। इसके के एक सिरे को अँगुली पर लपेट लें। दूसरे सिरे को दूसरे हाथ के अंगूठे व अँगुली के बीच दबा लो। रबर को 45 डिग्री के कोण पर तिरछा करके दोनो हाथों से रबर को खींचो। अब हल्के हल्के रबर को अंगूठे व अँगुली की ग्रिप से फिसलने दो। जैसे-जैसे रबर फिसलती जायेगी छल्ला ऊपर उठता चला जाता है। इस

प्रकार यह एक मज़ेदार जादू का खेल बन जायेगा।

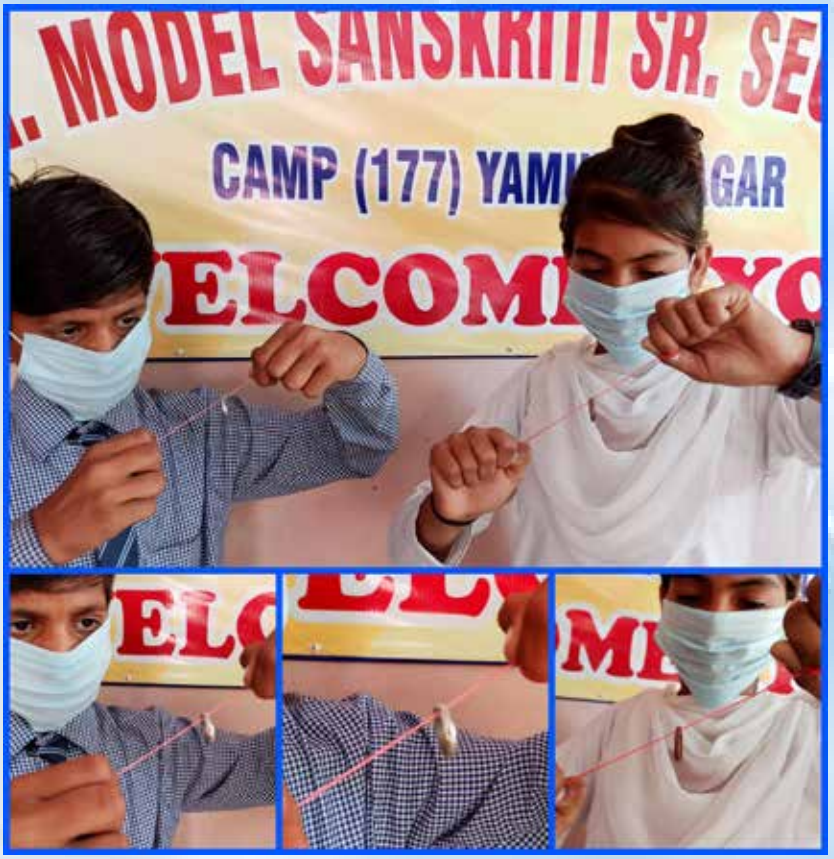

2.मौत का कुआँ बनाओ

एक रुपये का सिक्का व एक गुब्बारा लो। सिक्के को गुब्बारे में डाल कर गुब्बारे को फुला लो। अब गुब्बारे को अपनी अँगुलियों में कस कर हथेली का सहारा देते हुए गोल-गोल हिलाओ। सिक्का गुब्बारे की दीवार पर मेले वाले मौत के कुएँ के खेल की मोटरसाइकिल की तरह चलने लगेगा। ऐसा अपकेन्द्रीय बल के कारण होता है। अपकेन्द्रीय बल वह बल होता है जिसके कारण किसी गतिशील वस्तु में, केंद्र से दूर भागने की प्रवृत्ति होती है।

3.परछाई से खेलो-

अँगुलियों की परछाई से बहुत सी आकृतियाँ बनाई जा सकती हैं। परछाई असल में प्रकाश के स्रोत से निकल रही प्रकाश किरणों के मार्ग में कोई बाधा रखने के कारण बनती है। परछाई के आकार के छोटे-बड़े होने की वजह

बाधा की प्रकाश स्रोत से दूरी पर निर्भर करती है। इस गतिविधि को करने के लिये एक छोटी टॉर्च लेते हैं। टॉर्च को किसी किताब पर ऑन करके रख देते हैं। टॉर्च को प्रकाश स्रोत व सामने की दीवार को स्क्रीन मान कर दोनो के बीच मे अपनी हथेली या अँगुलियों की मदद से विभिन्न परछाइयाँ बनाते हैं जो कि हिरण, कुत्ता, कबूतर, चेहरा, चिड़िया आदि की आकृतियाँ प्रतीत होती हैं। यह खेल विद्यार्थी बहुत चाव से खेलते हैं।

4. जोड़-तोड़ से बना पंखा-

वह बच्चा ही क्या जो जोड़-तोड़ न करता हो। इसी का एक उदाहरण प्रस्तुत किया इतेश ने, उसने अपने एक खराब हुए खिलौने को तोड़ कर उसकी मोटर निकाल कर व खोल कर देखा। कि ये चलती कैसे है? विद्युत मोटर को खोल कर अपने पाठ्यक्रम के साथ प्रायोगिक रूप से उसका मिलान करके प्रश्न के उत्तर को बेहतर तरीके से जाना। उसने कुंडली, शाफ्ट, विभक्त वलय, ब्रश, स्थायी चुम्बक, सम्पर्क पॉइंट्स देखे। विद्युत मोटर की कार्यप्रणाली को समझा।

नवाचारी विज्ञान खिलौने के रूप में मोटर के एक्सल के साथ एक फैन ब्लेड को जोड़ कर पंखा बनाया। न्यूटन चकती को जोड़ कर सात रंगों से सफेद रंग का बनना सीखा। मोटर को बेहतर समझना व सहपाठियों के साथ अपने सभी अनुभव सांझा करना व चर्चा करना लाभदायक रहा। मोटर वाइंडिंग की वर्कशॉप में जाकर बड़ी-बड़ी खुली हुई विद्युत मोटरों को भी देखा व इसी कार्य को अपना करियर बनाने का दूरगामी निर्णय भी लिया। आजकल इतेश इलेक्ट्रिकल इंजिनियरिंग में डिप्लोमा कर रहा है। उसका लक्ष्य एक बढ़िया इलेक्ट्रिकल इंजीनियर बनने का है।

5. तार का गर्म हो जाना-

आसपास ही मिल जाने वाली स्टील की बारीक तार की कुंडली बना कर उसको बैटरी के साथ जोड़ कर विद्युत प्रवाहित करने पर उसका गरम होना विद्यार्थियों के लिए नया खेल बना हुआ था। विद्युत धारा का उष्मीय प्रभाव उन्होंने खेल-खेल में ही सीख लिया। जब किसी

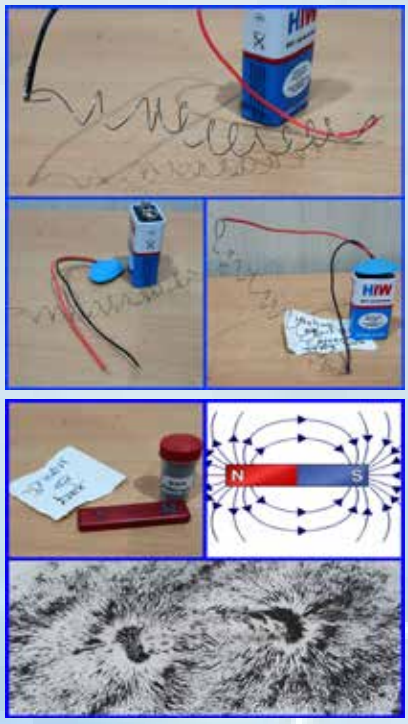

सुचालक तार से विद्युत प्रवाहित की जाती है तो वह तार गर्म हो जाती है।

6. चुम्बकीय बल रेखाएँ बनाना-

जंग लगे गेट से खुरच-खुरच कर जंग का उतारना, छानना। दूसरे बालक का खराद वर्कशाप से लौह चूर्ण का लाना। यह क्रियाकलाप किसी नई गतिविधि के लिए बन रही योजना की तरफ इशारा कर रहा था। वे चुम्बकीय क्षेत्र रेखाएँ बनाना चाहते थे। उनके प्रयासों के दौरान ही उनको विज्ञान किट से लौह चूर्ण व छड़ चुम्बक व अन्य प्रकार की चुम्बकें दी गयीं। अब उन्होंने विभिन्न आकृति की मैग्नेट्स की चुम्बकीय बल रेखायें बनायी। उन्होंने छड़, डिस्क, रिंग व घुड़नाल प्रकार के स्थायी चुम्बकों से भी चुम्बकीय क्षेत्र रेखाएँ बनायीं व जाना कि ये रेखाएँ जहाँ घनी होती हैं, चुम्बकीय क्षेत्र की तीव्रता अधिक तथा जहाँ विरल होती हैं वहाँ चुम्बकीय क्षेत्र की तीव्रता कम होती है। ये एक-दूसरे को नहीं काटतीं।

7. गेंद उछालो, न्यूटन का गति का तीसरा नियम-

न्यूटन के गति के तीसरे नियम के अनुसार 'प्रत्येक क्रिया के समान एवं विपरीत प्रतिक्रिया' होती है। जब एक वस्तु किसी दूसरी वस्तु पर बल लगाती है तभी दूसरी वस्तु भी पहली वस्तु पर विपरीत दिशा में उतना ही बल लगाती है। दोनों बल परिमाण में बराबर होते हैं। इस नियम के अंतर्गत गेंद को उछालने वाला एक खिलौना बनाया गया। शून्य लागत व स्थानीय उपलब्ध सामग्री से यह बनाया गया। एक बोतल को काट कर उसमें क्रॉस रबर बैंड बोतल की दीवार से सुराख करके बाँधे गए। रबर बैंड के मध्य में एक धागा बाँध कर उसे ढक्कन में से सुराख करके नीचे की तरफ से बाहर निकला गया। एक छोटी गेंद को रबर बैंड्स के ऊपर रखा गया। रबर बैंड को खींच कर छोड़ने पर गेंद बहुत ऊपर की तरफ उछाल लेती है दूसरे बच्चे उसे कैच करते हैं। इस विज्ञान खिलौने से खेल-खेल में ही बच्चों ने स्थितिज ऊर्जा, गतिज ऊर्जा, प्रत्यास्थता, न्यूटन के गति के तीसरा नियम के बारे में सीखा।

अध्यापक साथियो! फिर मिलते हैं अगले अंक के साथ। आपका अपना साथी-

साइंस मास्टर सह विज्ञान संचारक
रामॉसंवमा विद्यालय कैम्प
खंड जगाधरी, जिला-यमुनानगर, हरियाणा

क्रियाकलाप आधारित विज्ञान-शिक्षण की महत्ता

विज्ञान शिक्षण में किताबी ज्ञान की जटिलता को क्रियाकलाप आधारित शिक्षण द्वारा दूर किया जा सकता है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद द्वारा अनुमोदित कक्षा 6 से 10 के पाठ्यक्रम को सरल एवं सुलभ बनाने के उद्देश्य से विषय अनुसार क्रियाकलाप पाठ्य पुस्तिका में दिए गए हैं। परंपरागत विज्ञान शिक्षण के तरीके जिनमें अध्यापक मात्र श्यामपट्ट पर विषय का विश्लेषण कर अपनी जिम्मेवारी पूर्ण करता था, उससे इतर क्रियाकलाप आधारित शिक्षण में अध्यापक छात्र की पूर्ण भागीदारी विषय को रोचकता प्रदान करती है।

क्या है क्रियाकलाप आधारित शिक्षण?

क्रियाकलाप आधारित शिक्षण में विज्ञान विषय के प्रत्येक उप विषय को दैनिक जीवन आधारित गतिविधि से जोड़कर समझाया जाता है। इसमें विषय अध्यापक विज्ञान प्रयोगशाला के उपकरणों का उपयोग कर शिक्षण को अधिक रुचिपूर्ण बना सकता है।

क्रियाकलाप आधारित शिक्षण के उद्देश्य -

1. शिक्षण प्रक्रिया को रुचिपूर्ण बनाना।
2. छात्रों को केवल किताबी ज्ञान तक सीमित न रखना।
3. कक्षा में छात्रों की सहभागिता बढ़ाना।
4. विषय के प्रति छात्रों में जिज्ञासा उत्पन्न करना।
5. छात्र-छात्राओं को अपने विचार प्रकट करने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना।
6. विज्ञान प्रयोगशाला के उपकरणों का अधिक से अधिक उपयोग शिक्षण पठन क्रिया में करना।

क्रियाकलाप आधारित शिक्षण के उदाहरण-

मिट्टी द्वारा जल के अवशोषण का अध्ययन करना- कक्षा सातवीं की विज्ञान पुस्तिका के विषय 'मृदा' में मृदा द्वारा जल अवशोषण की दर की गणना संबंधी क्रियाकलाप दिया गया है। जिसमें अध्यापक विषय को क्रियाकलाप द्वारा रुचिपूर्ण बना सकता है।

अध्यापक छात्र-छात्राओं को विद्यालय के खेल के मैदान में लेकर जाता है तथा एक प्लास्टिक की बोतल जो दोनों तरफ से काटी गई है उसे मैदान की मिट्टी में धँसा देता है। अब मापक सिलेंडर की सहायता से 100 मिलीलीटर पानी लेता है तथा समूह का एक छात्र स्टॉप वॉच की सहायता से समय का मापन करता है। जब मापा गया जल मिट्टी में धँसी हुई प्लास्टिक की बोतल में डाला जाता है उसी समय से समय की गणना प्रारंभ कर दी जाती है इस प्रकार मिट्टी 5 मिनट में कितना जल अवशोषित करती है इसकी गणना की जाती है। अब अध्यापक कक्षा के छात्र छात्राओं के कुछ छोटे-छोटे समूह बनाता है तथा उन्हें विद्यालय की विभिन्न जगहों में जाकर जल के अवशोषण की दर का परिकलन करने के लिए कहता है। इस प्रकार छात्र-छात्राओं में मिट्टी द्वारा जल के अवशोषण की दर की गणना संबंधी समझ उत्पन्न होती है।

द्रव्यों के मध्य आबंध का पता लगाना-

कक्षा आठवीं से कक्षा 9वी में प्रवेश करने वाले छात्र छात्राओं को विभिन्न द्रव्यों के कणों के मध्य आबंध की समझ नहीं होती। इन छात्र-छात्राओं को इस क्रिया कलाप द्वारा द्रव्यों के मध्य आबंध की प्रकृति को भली-भाँति समझाया जा सकता है।

विषय अध्यापक कक्षा के सभी छात्र-छात्राओं को तीन समूहों में बाँट देता है। पहले समूह में छात्र-छात्राएँ एक-दूसरे के नजदीक खड़े होते हैं तथा पहला छात्र दूसरे छात्र के हाथ को कमर के पीछे से कसकर पकड़ता है, इसी प्रकार दूसरा छात्र तीसरे छात्र के हाथ को कमर के पीछे से कसकर पकड़ता है। दूसरे समूह के छात्र-छात्राएँ एक दूसरे के पास खड़े होते हैं जिसमें पहला छात्र दूसरे छात्र का व दूसरा छात्र तीसरे छात्र का हाथ पकड़ लेता है। तीसरे समूह में छात्र-छात्राएँ एक दूसरे से कुछ दूरी पर खड़े होते हैं तथा पहला छात्र दूसरे छात्र की उंगली को स्पर्श करता है व दूसरा छात्र तीसरे छात्र की उंगली को स्पर्श करता है। अब अध्यापक छात्र-छात्राओं को एक दूसरे से दूर हटने के लिए कहता है। कक्षा के सभी छात्र छात्राएँ देखते हैं कि समूह एक के सदस्यों का एक दूसरे से दूर हटना मुश्किल था जबकि समूह दो के सदस्य बड़ी आसानी से एक दूसरे से दूर हट गए। यहाँ विषय अध्यापक बच्चों को बड़ी आसानी से ठोस, द्रव एवं गैस के मध्य लगने वाले बल व इनकी प्रकृति को समझा सकता है।

क्रियाकलाप आधारित शिक्षण हेतु आवश्यक सामग्री-

विद्यालय शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा क्रियाकलाप आधारित शिक्षण हेतु प्रत्येक विद्यालय में अपर प्राइमरी साइंस किट उपलब्ध करवाई गई है। विज्ञान शिक्षण में किताबी ज्ञान की जटिलता को क्रियाकलाप आधारित शिक्षण द्वारा दूर किया जा सकता है। यदि विषय अध्यापक प्रत्येक उप विषय के अध्ययन में क्रियाकलाप आधारित शिक्षण पर बल दें तो निश्चय ही विज्ञान शिक्षण को प्रभावी तथा ज्ञान को चिरस्थायी बनाया जा सकता है।

राजेश कुमार
पीजीटी कैमिस्ट्री, राजकीय उच्च विद्यालय मुसेपुर
जिला- रेवाड़ी, हरियाणा

लघुकथा

शपथ

पानी के नल को बंद करते हुए वर्मा जी अपनी पत्नी को फटकार लगाते हैं -'मैं कितनी बार कह चुका हूँ कि पानी की जरूरत न हो तब नल को बंद कर दिया करो।'

'फिर क्या हो गया?'

'होना क्या था...कितना पानी बेकार में बह रहा है। आपको पता है पानी कितना अनमोल है। पानी के बिना कुछ नहीं है। जल है तो कल है ।

'बस करो। काफी देर उपदेश सुन लिये हैं।' पत्नी ने तमतमाते हुए कहा और जोर-जोर से रोने लगी।

स्कूल की छुट्टी का समय हो चुका था। इतने में ही उनका बेटा स्कूल से आ जाता है। माँ की आँखों से बहते हुए पानी को देखकर रोहन कहता है - 'माँ जी, क्या हुआ? आप क्यों रो रही हो?'

बेटे को पानी के व्यर्थ करने की बात व वर्मा जी के क्रोध की सारी बात बताई। संयोग से रोहन के अध्यापक ने उस दिन इसी विषय में पढ़ाया था।

रोहन अपनी माँ को समझाते हुए कहता है- 'यदि हम पीने योग्य पानी का अंधाधुंध दोहन करते रहे तो संभव है वह दिन दूर नहीं जब पानी केवल हमारी आँखों में ही बचेगा।'

रोहन की बात सुनकर उनकी माँ अपनी गलती स्वीकार करते हुए पानी के सदुपयोग की बात को अपना नैतिक दायित्व मान कर कभी भी पानी को बेकार न करने की शपथ लेती है।

अशोक कुमार ढोरिया
प्राथमिक शिक्षक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
तुम्बाहेड़ी, जिला- झज्जर, हरियाणा

हमें बचाना है

हमें बचाना है
जल को, कल को
जीवन को
आनेवाली पीढ़ी के लिए
प्रकृति के हर पल को

हमें बचाना है
ऊँचे हिम-शिखरों को
बर्फ से ढकी चोटियों को
अविरल बहती जलधारा को
कलकल बहती नदियों को

हमें बचाना है
लहलहाते बागानों को
उपवन और खलिहानों को
सर-सर बहती हवाओं को
फर्र-फर्र उड़ते परिंदों को

हमें बचाना है
हिलोर मारते तड़ागों को
करतब करती मछलियों को
रंग-बिरंगी बत्तखों को
किनारे खड़े बगुले को

हमें बचाना है
उमड़-घुमड़ते बादलों को
सावन की हरियाली को
सूरज की लाली को
सृष्टि के जलचक्र को

हमें बचाना है
जल को, कल को
हमें बचाना है
हरी-भरी धरती को
भरी-पूरी सृष्टि को

कुमार सतीश
पीजीटी हिंदी
राआसंवमा विद्यालय कैंप
जिला-यमुनानगर, हरियाणा

2021

मई-जून माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

1 मई- अंतरराष्ट्रीय श्रम दिवस
8 मई- विश्व रेडक्रॉस दिवस
9 मई- मातृ दिवस
11 मई- राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी दिवस
12 मई- अंतरराष्ट्रीय नर्स दिवस
14 मई- ईद-उल-फितर, परशुराम जयंती
26 मई- बुद्ध पूर्णिमा
21 मई-आतंकवाद विरोधी दिवस
13 जून- महाराणा प्रताप जयंती
14 जून- गुरु अर्जन देव शहीदी दिवस
24 जून- संत कबीर जयंती

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Turn your Negatives into Positives

Dr. Himanshu Garg

All of us experience hardships and difficult situations at some point in life. It is an unavoidable part of life. No matter what negative situation you are in, it is there for a reason, otherwise you wouldn't have it in your life.

We all get negative situations and if we keep punishing ourselves for them, it becomes a habit and we will find it very tiresome to let them go and move on to more positive choices. If you keep repeating words of hatred like- I hate my friends....I hate my job... I hate my illness etc. Definitely these negative statements cannot attract any love or good. The love or hatred expended in our life is created by us only.

Once we realize this, then we can find positives from our negatives. Whatever our negatives are, we can learn to fulfill our needs in more positive ways to make life happy and peaceful. However if we really look within and are honest with ourselves we will find positive ways.

I also experienced one serious setback some years ago. My mobile was stolen and I realized that I have lost thousands of the contact details, precious documents, pics of memorable moments with that mobile. I was feeling so helpless. I even wept for all that. But then I managed that situation only by positive thoughts. Instead of weeping, I got my old number blocked and regenerated my same contact number. Then I analyzed my past situation with the lost mobile. I really needed a 4G mobile with better features to work properly. I thanked God to give me the chance to purchase a new more

featured 4G mobile. I again thanked God for blessing me with the company of friends and family members. I lost those pics but still I can click more fabulous pics with them. For getting contact details, I changed my status on social media about mobile lost and requested them to send their mobile numbers with reference. I was able to get most of the contact details again. I also sent my lost mobile's IMEI number for tracking its location. Believe it, this time I have no regret that I lost my mobile. Rather I have great excitement for my new 4G Mobile.

Some other examples are-

*If you lost your job then instead of getting angry, revengeful, and discouraged, you can use the opportunity to find a better job or to start your own business.

*If your partner has cheated you then instead of getting angry and taking revenge, choose to humiliate your partner, or find a more compatible partner, or learn to enjoy being single and less co-dependent.

*If you experience monetary problems instead of feeling helpless or thinking bad you can start to learn to manage your finances better and you can solve the problem by thinking of a good idea.

*If any health problem comes. Instead of feeling helpless and negative, patients should congratulate themselves for finding a safe way to have their needs met.

We have to understand that whatever issue or problem we have, we contributed in creating it in order to handle certain situations.

Turn all your negatives into positive and feel the astonishing change in your life....

Asstt. Professor
Govt. College for women,
Jind (Hr.)

The Raven's Spring Song

Come, death is calling
The sky is blue
She leads you by the hand
There's no time to bid adieu.

There's a strange peace
One you never knew
When you lived the life
You thought would continue.

Strange those interludes
Music to the ears
Now, I hear prayers
I've never heard before
Had they drowned in life's furore?

Come, death is calling
We cannot participate
We must await patiently
At death's gate.

Come, death is calling
She has buried love and hate
Why is it that you weep
When you hear of a stranger's fate?

Perhaps, you are born again
A tender, spring bud anew
Perhaps, you did not know things
Grey skies hid from view.

- Purobi Menon

Meh-Teh

Dr. Deviyani Singh

It was Holi and as we got off the bus from Delhi to Kullu we were mobbed by the local boys.

I warned my pretty friend Diva, - "Whatever you do, don't run; coolly allow them to put a tika."

She panicked and the mob chased and colored her in horrid green slime. Thus our trek got an ominous start with all of us looking like the Hulk. We reached Naggar, a hamlet full of German Bakeries. We gobbled up pretzels and rested the night there in a seedy guest house. We were to set off early in the morning but we woke late. Two of the boys went and found two young chaps to guide us to the Chanderkhani pass and Malana village. Guides were scarce as everyone was in a holiday mood.

We were a total of eleven people - two guides, seven boys, and two girls. We were carrying a small stove and some rations. After a breakfast of over-sweetened milky daliya (wheat porridge) and oodles of tea, we were handed out two boiled eggs and a small packet of roasted moong daal each which was to be our mobile lunch. Our guides were wearing gum boots. For that matter none of us had proper mountaineering clothes or equipment. We were at that reckless age as college fresher's when nothing seemed to daunt us. We were just out to have loads of fun and make the most of a long weekend; or so we thought.

We passed through a thick forest of deodars, blue pines, apple, walnut, oak, and cherry trees. There were vibrant flowering rhododendron trees. Their blossoms fell on the path in an inviting red carpet. Then followed a harder ascend. The thick alpine vegetation turned sparse with small shrubs. Then the snowline began. At first it was just ankle deep snow which we happily trekked through, soon after it was thigh deep. That's when the trouble began. Our so called professional guides kept stopping to empty their snow filled gum boots. One of the guides – Yeshe, a Nepali, was very religious and superstitious. His family had sent him off to a monastery to become a monk, but he had run away. Now he was convinced he was cursed and to ward off evil spirits he kept muttering mantras. He stopped to offer prayers at stone shrines along the way and strung up Buddhist prayer flags. One of the boys Rambo claimed to be a great photographer with lots of trekking experience but we found out otherwise.

"Wait yarr. I gotta take pics Yarr." – Rambo kept stopping to take photos, which we found was just an excuse for him to catch his breath. Another boy Tony was a chain smoker and very fond of drinking. A few hours into the trek, he found out exactly what abusing your lungs and liver can do to your stamina.

"I will not touch cigarettes or booze

from now on, 'kasam se'." Tony vowed right there, fingers placed on his Adams apple.

Occasionally someone would give a loud yelp when they sunk deep in the snow or caught their feet in the snow covered roots of trees. It had been about three hours since we began and Rambo, Tony and the guides were lagging behind. Even we girls were walking at a better pace than them. When we halted for a lunch break they pulled out a bottle of apple brandy and took swigs in turn. Tony's eyes lit up. We went on walking till evening fell. Rambo imagined something was following us and one of his photographs showed a blurry brown object in the bushes but everyone laughed at him attributing it to his trembling hands. We reached a ledge giving us a breathtaking view of the Dhauladhar ranges. The light began to fade but we were nowhere near our destination yet.

"There should have been some bakarwals (shepherds) huts, but they may have been buried in the snow." - Our guide declared to our horror that we were lost! We panicked as we were not carrying any tents. After scouting around quite a bit for shelter we found only a little overhang of a rock face with barely enough space to keep the stove. We cooked some 'khichri', melted snow and took small sips of the blackish warm water. We all huddled together placing our mats and sleeping bags in a row. None of us managed to sleep. Rambo imagined he was getting frostbite. "They will have to cut off my toes yarr. 'Main langra ho jaunga'." He lamented. The guides and Tony however were in high spirits; courtesy the apple brandy.

In the chill of the moonless night, Yeshe regaled us with stories of ghosts and Himalayan myths, including that of the Big Foot (the abominable snowman called Meh-Teh in Tibetian folklore). Mountaineers had reported over the years seeing his footprints and had taken photographs. Yeshe exaggerated gesticulating wildly - "The Yeti is like an ape 10 to 20 feet tall. My Father send me to Pangboche monastery where the Yeti scalp and hand is kept." (Sic)

Yeshe was whispering now - "One night I open locks and touch scalp with my bare hands. After that every night I dream Yeti chasing me as he very angry. I so frightened I run away."

I drifted off into an exhausted stupor and dreamt that there was a warm cave full of goodies just behind us and the Yeti was sitting inside eating candy and blowing bubbles of Hubba Bubba gum. We got up at the first light of dawn. I went around the rocky outcrop to relieve myself and was startled by a blur of movement. Thinking it to be a bear I rushed back but my teammates dismissed it as effects of strong winds. Someone got the stove going and served maggi noodles. It looked like frozen white worms as it got stone cold the moment we put it on our plates. I tried to shove it down my throat to regain some strength; I was feeling head-achy and dehydrated. I spotted Diva washing her face with melted snow and thereafter lining her eyes with kajal. The boys all laughed at her vanity. Thankfully the weather was stable throughout the night and the morning was clear and sunny. The guides had confided that they were not professionals and wanted to make some easy money. Yeshe used to keep something wrapped in a plastic packet. I thought it must have been either hashish, or money but he wouldn't let anyone see it.

After this the group was divided. Half wanted to turn back and the others wanted to go up further. We decided to leave six people at the makeshift camp and five of us went ahead to scout for a path and if possible get help. Tony gladly volunteered to stay back and sit sipping apple brandy along with a guide. So I, three boys and Yeshe went ahead. We walked for nearly two hours and still couldn't find a path. Higher up it was all ice and extremely slippery. We kept walking for another two hours hoping to reach the village by afternoon. We came across a huge ridge of ice and stopped. "The village is in valley beyond the ridge, come, come." – Yeshe exclaimed. We were ill equipped for this kind of climbing. Moving at a snail's pace to keep from slipping we managed to inch across the ridge but then came upon another very precarious stretch of ice. It looked firm but there must have been a crevice coated with a thin layer of ice. Before I knew it I fell deep inside. That's the last thing I remember as I screamed my head off in excruciating pain and passed out.

I don't know how long I remained unconscious as I had lost count of time. When I came to, I was in a dark cave. My face was covered with ice but strangely I was still warm. I took off

my gloves and checked for frostbite. I could not move my right leg. I realized I had fractured my ankle. I heard a rustling sound and lay perfectly still. Another whistling sound – "swoosh." Something warm brushed against me. I was unable to see anything in the pitch dark. I thought it was the fur lining of my parka that had pressed against my cheek. I found some frozen berries. The ice melted in my mouth and I realized how thirsty and hungry I was. I ate all the berries forgetting the danger I was in for a while. I crawled on all fours till the edge of the cave. Outside it was broad daylight and I squinted against the rising sun. I was greeted with the stunning view of the Deo Tibba covered in pristine snow but my joy was short lived as when I looked down I froze in terror. The cave was in a steep rock face and below me was a sheer drop. How the hell had I landed up here? My brain wasn't really working so I crawled back inside. I was startled to see the outline of what looked like a huge ape. It was over 7 feet tall and touched the roof of the cave as it stood up on two hind legs. I tried to get away but it growled at me exposing big canines. I stumbled and hit my head on a sharp rock and warm blood ran into my eyes. I could see the hazy outline of the creature approaching me as I swooned...

The next thing I knew when I came to I had reached back near the crevice I had fallen into. I saw a search party in the vicinity and shouted. They rushed to my side, quickly wrapped me in blankets, and put me on a makeshift stretcher.

They were about to lift me up when a member of the search party exclaimed-

"Come see these footprints. They are huge and in the shape of human feet ... but too big to be human."

"Who would dare to walk barefoot in the snow? They can't be human." The leader said.

They followed the footprints and they ended abruptly over a steep precipice. So whatever it was that had carried me there had either jumped off or climbed down that impossible steep cliff. The next day another search party was sent. They rappelled over the cliff face, however no trace of any cave could be found. But I had gone missing for two whole days and I possibly could not have survived lying in the snow crevice. Some said it was a sort of miracle that I was insulated by the snow in a sort of ice igloo. Others thought I was hallucinating because of hypothermia. Turns out we had been well and truly lost and instead of heading to the village we were headed in the opposite direction to even higher altitudes. The rest of my three companions, except Yeshe who disappeared and then found his way back were found by some professional mountaineers. They had almost given up hope that I would still be alive. No one believed my story but I knew for sure that I was the only one in the world that had met the living legend - the Himalayan Yeti. The myth was real and the Yeti was not dangerous but an intelligent mammal that had fed and kept me warm for two days before placing me near the rescue team.

Yeshe came and helped me to prop myself up on my hospital bed. "Yeti saving Ma'am is good omen. I think that now this curse after I touched the sacred scalp is over." He held my hand, touched it to his forehead, bowed and left. When I opened my palm I found a bit of what looked like a beast's brown hair wrapped in a bit of plastic…

Disclaimer : This story is a work of fiction and a product of the author's imagination. Any resemblance to actual persons or events is purely coincidental.

Editor, Shiksha Saarthi
deviyanisingh@gmail.com

Compendium of Academic Courses After +2

MEDIA AND MASS COMMUNICATION JOURNALISM

Introduction

Journalism includes preparation of written, visual, or audio material envisioned for dissemination through public media with reference to factual, ongoing events of public concern. It deals with broadcast world such as TV and Radio, Web journalism, Print Journalism etc. There are also courses in particular areas of journalism like sports, television, photo, press law etc.

Courses

1. B.J (Bachelor of Journalism)
2. B.J.M.C (Bachelor of Journalism

and Mass Communication)
3. B.A - J.M.C (Bachelor of Arts in Journalism and Mass Communication)
4. B.C.J (Bachelor of Communication and Journalism)
5. B.M.M (Bachelor of Mass Media)
6. B.J (Hons) (Bachelor of Journalism (Honours))
7. B.A - Mass Communication (Bachelor of Arts in Mass Communication)

Eligibility

» For Post graduate degree courses: BA in journalism.
» There is also PG diploma in journalism after graduation.

Institutes/Universities

1. Kamala Nehru College for Women, Delhi
2. Indian Institute of Journalism and New Media, Bengaluru
3. Lady Shri Ram College for Women, Delhi
4. IIMC, New Delhi
5. Xavier Institute of Communication, Mumbai
6. Film and Television Institute of India, Pune.

MASS COMMUNICATION

Introduction

Mass communication is the course related to how individuals and entities relay information through mass media to large segments of the population at the same time. It usually relates to newspaper, magazine, book publishing, as well as radio, television and film, as these mediums are used for disseminating information, news and advertising. Mass communication course in a collective term has a series of streams like-news-reading, reporting, columnist, Anchoring, radio jockey, public-relations, advertising, production, acting, web journalism, social media etc.

Courses

1. B.A. (Mass Communication)
2. B.B.A (Mass Media Management)
3. PG Diploma.(Mass Communication & Journalism)
4. M.A. (Communication and Journalism)
5. M.A.(Mass Communication & Journalism)
6. M.A.(Mass Communication)
7. M. B.A. (Mass Media Management)
8. Ph. D in Mass

Eligibility

The selection process conducted by various colleges includes interviews, group discussion, and written tests for a particular media or mass communication course at a university, 10 +2 for undergraduate course.

Institutes/Universities

1. Anna Malai University, Chennai
2. Madurai Kamraj University, Chennai
3. Symbiosis Institute of Journalism & Mass Communication, Pune
4. Department of Communication & Journalism, University of Poona
5. Film & Television Institute of India (FTII), Chennai & Kolkata
6. Assam University, Silchar, Assam.
7. University of Kolkata
8. Aligarh Muslim University, U.P.
9. Banaras Hindu University, U.P.
10. Guru Nanak Dev University
11. Punjab University
12. Kurukshetra University, Haryana
13. Jawahar Lal Nehru University, New Delhi
14. Guru Gobind Singh Indraprastha University, New Delhi
15. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)
16. Sardar Patel University, Gujarat
17. Nagpur University

PUBLIC RELATIONS

Introduction

Public relations is related to corporate communication and image building. The field is involved in promoting the organization goals and sustain a good reputation in public through communication. It helps to build relationships with stakeholders through various sources for news/ information dissemination.

Courses

1. MA (Advertising and Public Relations)
2. PG Diploma in Advertising and Public Relations
3. MBA (Advertising and Public Relations)

Eligibility

Graduation in any discipline from

recognized University

Institutes/Universities

1. Indian Institute of Mass Communication, Delhi
2. Madurai Kamraj University, Tamilnadu
3. Makhanlal Chaturvedi National University of Journalism, Madhya Pradesh
4. Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
5. Guru Jambeshwar University, Haryana
6. Kurukshetra University, Haryana
7. Aligarh Muslim University, Aligarh
8. Punjabi University, Patiala

ART DIRECTION

Introduction

Art Direction includes work such as creation and management of visual style and images in magazines, newspapers, and product packaging, movies and television productions. Artworks, illustrations or layouts are created for various purposes and used in advertising, newspaper and magazines, theatre, motion picture and video games industries.

Eligibility & Courses

1. B.Sc. (Cinema) + Diploma in Direction
2. Post Graduate Diploma in Art Direction and Production Design

Institutes/Universities

1. Film And Television Institute Of India, Pune
2. Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata
3. Center for Research in Art of Film and Television, Delhi
4. National School of Drama, Delhi

CHOREOGRAPHY

Introduction

Choreography is an artistic opportunity to express one's personality through the creation of dance. The course includes designing and direction of routines used in dances and

performances. The course gives an opportunity to create, edit, and practice with professionalism and provide entertainment for audiences.

Course

1. B.A in art and dance
2. B.A. in Dance
3. B.P.A. in Dance - Kathak
4. M.A. in Dance

Eligibility

12th or equivalent exam in any stream

Institutes/Universities

1. Pune University (UNIPUNE) – SPPU (Savitribai Phule Pune University)
2. University of Mysore
3. Sangeet Natak Academy, New Delhi
4. Banaras Hindu University, Varanasi
5. Natya Institute of Kathak and Choreography, Bangaluru
6. Andhra University Visakhapatnam.

DIRECTION

Introduction

Direction deals with creative aspects of production such as creating, shaping and controlling artistic and dramatic facets of a film/drama, visualization of script or screenplay, selection of setting/ locations and special costume effects. It comprises guidance for technical crew/ actors in creation and development of a concept or visualization.

Courses

1. Bachelor's degree program in fine arts, film, or a related field.
2. Three Year Post Graduate Diploma in Direction & Screenplay Writing
3. Three-year full-time Diploma Courses in Dramatic Arts
4. Three Year Post Graduate Diploma in Art Direction and Production Design

Eligibility

Bachelor's Degree in any discipline

Institutes/Universities

1. National School of Drama, Delhi
2. Film and Television Institute of India, Pune.

FILM/DRAMA PRODUCTION

Introduction

In Film/Drama production, is a joint activity of making movies, television shows, and sometimes commercials. The work includes camera, lighting, editing, sound and set design. This field deals in identifying design styles for sets, locations, graphics, props, lighting, camera angles and costumes, while working closely with the director and producer.

Courses

1. PG Diploma in Film, Television and Digital Video Production
2. One Year Post Graduate Diploma in Feature Film Screenplay Writing
3. 3-year (full time), Postgraduate Programme in Cinema (specialization offered in Direction & Screenplay Writing)
4. Three Year Post Graduate Diploma in Direction & Screenplay Writing
5. Post Graduate Diploma in Art Direction and Production Design
6. One Year Post Graduate Certificate Course in TV Direction
7. Three-year full-time Diploma

Courses in Dramatic Arts

Eligibility

One can get a degree (Bachelor's or Master's), or pursue diploma courses, the duration of which may vary between 3 months and 1 year.

Institutes/Universities

1. Film And Television Institute Of India, Pune
2. Satyajit Ray Film and Television Institute, Kolkata
3. Centre for Research in Art of Film and Television, Delhi
4. National School of Drama, Delhi
5. Jawaharlal Nehru Architecture and Fine Arts University, Hyderabad
6. College Of Fine Arts, Hyderabad

FINE ARTS

Introduction

Fine Arts is the study of creative disciplines like sculpture, painting, and drawing. This course includes variety of mediums–paper, metal, clay, photographic film.

Courses

1. Diploma in Fine Arts
2. Bachelor in Fine Arts
3. Master of Fine Arts
4. PhD in Fine Arts

Eligibility

Pass 10+2 with any subject

Institutions/Universities

1. College of Art, University of Delhi, Delhi
2. Faculty of Visual Arts - Banaras Hindu University
3. Sir J. J. Institute of Applied Art Mumbai
4. University of Mumbai
5. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://www.ignou.ac.in/)

PERFORMING ARTS

Introduction

Performing Arts is a form of artistic expression through Acting or Music performances done live for audiences, some of these include ballet, puppetry, mime.

Courses

1. Certificate in Performing Arts

2. BFA (Bachelor of Fine Arts)
3. BVA (Bachelor of Visual Arts)
4. B. Cr.A (Bachelor of Creative Arts)
5. B.P.A. (Performing Arts)
6. Ph. D

Eligibility

It is better to visit the web sites for academic requirements as these vary. Some institutions base admission on auditions also.

Institutes/Universities

1. Delhi College of Arts, Delhi
2. Faculty of Visual Arts, Banaras Hindu University, Varanasi
3. Maharaja Sayajirao University Of Baroda, Vadodara
4. Faculty Of Fine Arts, Jamia Millia Islamia, New Delhi
5. Indira Gandhi National Open University, New Delhi (http://

www.ignou.ac.in/)

VOCAL AND INSTRUMENTAL

Introduction

Music is an integral part of Films, Art and Theatre. The study of music includes theoretical understanding of Music and its history, interpretation of music, composition, voice instructions and much more.

Courses

1. BA Honours in Hindustani Music- Vocal/ Instrumental (Sitar/ Sarod/ Guitar /Violin/ Santoor) or Karnataka Music
2. Vocal/Instrumental (Veena/ Violin) or Percussion Music (Tabla/ Pakhawaj)
3. MA (Music) /MPhil/PhD (Music)

Eligibility

10+2 Examination with Music as one of the subjects B.A. with Music /B.A. (Hons.) in Music for PG Course

Institutes/Universities

1. University of Delhi, Delhi
2. Kurukshetra University, Kurukshetra
3. Shriram Bharatiya Kala Kendra, New Delhi
4. The Kalakshetra diploma in Carnatic music (By Kalakshetra Foundation, Autonomous body under Ministry of Culture, Govt. of India), Chennai.

BATTLE WITH THE STORMY SEA

When drifting against the tide,
No longer hope to witness far and wide,
Still sail bravely your boat forward and steadily
Through the rough and tough waves, though not readily.

Havoc is not created by those humongous waves so blue,
But by the mind that is there within you!
Conquer your fear first, for success is what you crave,
Curbing the mind is the only key to defeat the waves.

Don't look at yourself with self-pity and helplessness,
Face the Stormy Sea as a warrior with fearlessness.
Destiny knows that you alone can fight!
You possess power to face it, about that I am right.

This battle will last just a few more dark hours,
It's the high tide, yourself you'll have to empower.
You can't just turn back and run away at this moment so last,
Plunge into the storm and pave your way past.

There ahead is the sea shore along the soothing stream
And amidst the palms is the rising sun beam.
Yes, you've finally accomplished your feat
Only because you had not accepted defeat.

Atharv
Class- 10th B
St. Kabir Public School, Sector-26
Chandigarh

Ten steps to transform the quality of education in India

Sridhar Rajagopalan

In this article, Sridhar Rajagopalan, Managing Director of Educational Initiatives, suggests 10 initiatives that can help transform the quality of education in India.

Most of the steps needed to transform the quality of education in India do not require policy change or a new educational policy. Yet, these steps are not getting taken because there is no visible crisis pushing us to act. Only a few points in my list below – like the creation of a cadre of Indian education civil services, replacing the policy of schools within a kilometre of every habitation with a free transport to the nearest school policy – are policy-level issues.

Below are 10 initiatives that I believe can transform Indian education, if undertaken in a concerted way and sustained over at least a five-year period:

Initiative 1: Make the problem visible

Regular assessments are needed to measure progress in learning and make the current levels visible in a way that can be understood widely. India should participate regularly in international assessments like Trends in International Mathematics and Science Study and Programme for International Student Assessment so as to set goals and benchmark its performance and progress. The quality of national assessments should be improved and third party assessors like Annual Status on Education Report and Educational Initiatives should be encouraged to provide periodic feedback. The District Information System for Education (DISE)1 system should be upgraded to a 'Student Progress Tracking System' which will track learning levels of individual children and provide diagnostic data to serve as a basis for improvement to schools and teachers.

Initiative 2: Build systemic and institutional capacity

The biggest problem in the educational system today is a severe shortage of capacity. Consider two initiatives – the Continuous and Comprehensive Evaluation (CCE) and the Teacher Eligibility Test (TET). Few people disagree that these initiatives are based on sound principles and good ideas. Yet, many – some may say most – well-intentioned ideas do not achieve their goals due to people across the system not having the required skills. In the case of the TET test, pass percentages have been between 1% and about 15% and the initiative has not had the intended impact. It raises questions both on our teacher training capacity and also the capacity to understand and execute the assessments successfully.

Strengthening research on learning is the first step and only long-term solution to this crisis. I recommend establishing a 'science of learning' centre, either as a part of National Council of Educational Research and Training (NCERT) or as a separate institute, with a mission of promoting research on how children learn. This institute can undertake research on reading, elementary mathematics, intelligent teaching systems and assessments.

However, research needs an ecosystem and we now need to kick-start such an ecosystem. We recommend the creation of a research fund (similar to the American National Science Foundation Fund), which will provide grant support for innovation to take root and grow in research institutions non-governmental organisations (NGOs) and private players based on their track record and quality of research, and direct research towards areas of national and state priorities.

Initiative 3: Establish a reading mission

If we can ensure that 80% of our children can read and write well in any one language by the time they are nine years old, we would have solved 80% of our educational problems. Reading has to become a focus area of both action and measurement and a movement which involves all. A national-level centre for reading research is more important for India than any Indian Institute of Technology and is not so difficult to create. Specialised training programmes need to be created for teachers on reading skill development and measurement. Reading tests need to be made available on computers, tablets and mobile phones so that parents can determine the reading levels of their children.

Initiative 4: Build teacher and head teacher capacity

Starting with regular assessments of teacher needs which will determine individual gaps/needs in teachers, high-quality training programmes need to be deployed for teacher training. Information and Communication Technology should be used as a tool to provide many of these courses on an on-demand basis.

The resources available in the National Repository of Open Education Resources (and other open education resources) should be moderated by experts to ensure that high-quality resources – including videos, teaching material and assessment questions - are available to every teacher. Rather than depending solely on government organisations like the NCERT to create all this material, this work should be carried out through 'request for proposals' that would allow talented individuals and organisations to participate and contribute.

Initiative 5: Change the goal post by reforming board exams to test understanding, not recall

India's rote-based Board Exams are a source of the learning crisis observed even in primary schools. The focus on students, parents and teachers is on maximising exam marks and not on learning, which needs to be corrected by having Board Exams that measure learning. This is not difficult to do be-

cause there are so many exams that can serve as a benchmark for this change.

Initiative 6: Invest in technology for education

Hand-in-hand with educational research inherent in all the initiatives above, there is a need to research and develop ways to use technology to drive the change we desire. The focus should not be on installing hardware but creating new, high-quality content such as intelligent teaching systems and tools that will help students to hone basic skills like reading and mathematics, and developing content in multiple Indian languages. ICT-based remediation programmes should be encouraged, in which the service provider is reimbursed based on the measured student improvement. ICT should also be used to track teacher attendance. Free high-speed internet connections can be provided to all schools through a simple scheme by which the government reimburse internet service providers directly.

Initiative 7: Introduce school-based practices for learning improvement

This includes initiatives like monthly tests in school with academic support from State Council of Educational Research and Training (SCERT) or District Institute of Educational Research and Training (DIET) and quarterly parent-teacher meeting days which encourage parents to visit schools and build a parent-teacher connect focused on student learning.

Initiative 8: Work on mindsets through public education campaigns

Public education campaigns should be aimed at prospective teachers to attract talent to the sector; at parents to make them aware of what constitutes a good school, the value of education beyond marks etc.; and at existing teachers to make them understand that every child can learn well if supported etc.

Initiative 9: Holistic development

Efforts in areas such as sports, arts and culture should be initiated or expanded in order to enrich holistic development.

Initiative 10: Implement legal and structural changes

A separate Indian education services cadre at different levels, within the civil services, should be created. Parents should be bound to send students to school, and district education officials should be responsible for the quality of both private and government schools. Public Private Partnership (PPP) arrangements should be explored for areas like strengthening DIETs, providing teacher training both using traditional and distance/ICT methods, providing standardised assessments, running remedial centres etc. Today, the pre-school, elementary and secondary structures are distinct with different bodies overseeing their curricula. They should be combined under a single authority, possibly the SCERT. Fragmentation of schools should be reduced by combining schools and providing free transport to children further away rather than building schools close to every habitat.

Notes:

1. District Information System for Education (DISE) provides schools-related statistical information on Sarva Shikhsha Abhiyan (SSA). SSA is Government of India´s flagship programme for achievement of universalisation of elementary education in a time bound manner.

"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"

https://www.ideasforindia.in/topics/human-development/ten-steps-to-transform-the-quality-of-education-in-india.html

Educational Initiatives
sridhar@ei-india.com

Drive off Corona

Keeping the lives aside,
Disastrous, more than tide,
A shaggy monster spread worldwide,
Hard to count how many died?

China, USA, Spain or Rome,
Captivating the world in home,
Trips, tours limited to chrome,
Deserted temples, so are domes.

Asked the covid-19,
Where had you been,
Have you met Satan to conspire,
Signed accord to be his heir?

Planned to spread death despair,
Worries, miseries here and there,
Green eyed monster smiling in the air,
Doctors chasing everywhere.

The grief striken Earth,
Crying her eyes out,
An epitome of tolerance,
Loudly shout.

The originator preserver of the world,
Deliver me as I am hurled,
Come, help the mankind,
Merciful, you are so kind!

Brave fighters in white coats,
Yearn for a vaccine,
Looking into notes,
Sailing the world in ships and boats.

Police, cleaners, bureaucrats,
PM, CM, officials all states,
One and all on duty,
To honour the coat of arms is our duty.

Break O Break the chain,
Don't dwell Covid in vain,
To defeat the devil is our aim,
Let life be cherished again!

Sonia
PGT English
GSSS Luksar
Jhajjar, Haryana

Amazing Facts

1. **The fastest shark is the "Shortfin Mako," which can swim as fast as sixty miles per hour.**
2. There are about 6,800 languages in the world.
3. Studies have shown that by putting on slow background music it can make a person eat food at a slower rate.
4. By walking an extra 20 minutes every day, an average person will burn off seven pounds of body fat in an year.
5. Octopus and squid are thought to be the most intelligent of all invertebrates.
6. On average, a beaver can cut down two hundred trees a year.
7. The average four year-old child asks over four hundred questions a day.
8. Ironically, watermelons, which are 92% water, originated from the Kalahari Desert in Africa.
9. The first tattoo machine was invented by Samuel O'Reilly. He did this by using equipment that Thomas Edison used to engrave hard surfaces.
10. In a lifetime, an average human produces 10,000 gallons of saliva.
11. A slug has four noses.
12. Chili Powder was invented in the 19th century in the American Southwest.
13. The sea cucumber spills its internal organs out as a defense mechanism.
14. Approximately 25,000 workers died during the building of the Panama Canal and approximately 20,000 of them contracted malaria and yellow fever.
15. Braces were first invented by Pierre Fauchard in 1728. The braces were made by a flat strip of metal, which was connected to the teeth by thread.
16. Marilyn Monroe had six toes.
17. There is a town in Texas called Ding Dong. In 1990, the population was only twenty-two people.
18. The total volume of mail that went through the Canadian postal system in 1950 was 1,362,310,155 items.
19. The highest toll paid by a ship to cross the Panama Canal was by the Crown Princess on May 2, 1993 in the amount of $141,349.97 U.S. funds.
20. The name of the famous snack "Twinkies" was invented by seeing a billboard in St. Louis, that said "Twinkle Toe Shoes."
21. The word "Nazi" is actually an abbreviation for Nationalsozialistische Deutsche Arbeiterpartei, which refers to the National Socialist German Workers Party.
22. The unique characteristics of Barbie dolls in Japan are that they have their lips closed with no teeth showing.
23. The Coca Cola company offers more than 300 different beverages.
24. Neptune was the first planet in our solar system to be discovered by mathematics.
25. Soldier Field is the oldest field in the NFL.
26. In the U.S., over one million gallons of cosmetics, drinks, and lotions are sold that contain aloe in them per year.
27. The name Jeep came from the abbreviation used in the army for the"General Purpose" vehicle, G.P.
28. Eating eight strawberries will provide you with more Vitamin C than an orange.
29. Mosquitoes have teeth.
30. The citrus soda "7 UP" was created in 1929. The original name of the popular drink was "Bib-Label Lithiated Lemon-Lime Soda", but it got changed to "7 UP."

https://greatfacts.com/

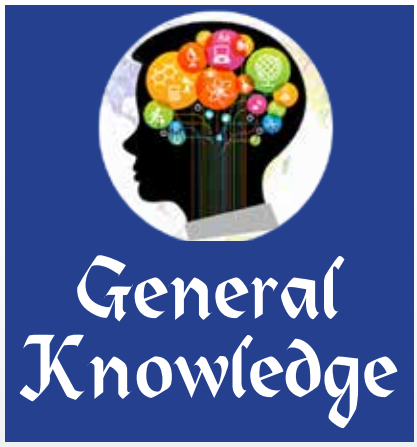

1. An insect of the order Diptera is more commonly called a what? **Fly**
2. The Duke of Wellington's suggestion of "Sparrowhawks" to Queen Victoria was made in connection with the control of birds at which London building? **Crystal Palace**
3. The Fresnel lens (in which concentric steps maximise light focus and minimise lens weight), popular in the 1900s in vehicle lights, was first devised c.1820 for what application? **Lighthouses**
4. Babel Fish is an icon/metaphor/brand for instantaneous what? **Translation**
5. What legal term refers to the increasing of guilt or seriousness of a crime due to attendant circumstances such as intent, use of a weapon, severity of injury, etc? **Aggravation**

6. Anaphylaxis is what sort of life-threatening illness: Allergic reaction; Virus or Heart attack? **Allergic reaction**
7. The words ephemera/ephemeral refer to things of a: Wild imagination; Vast scale; Tiny scale; or Brief duration? **Brief duration**
8. What is the fruit of the Phoenix genus of plants? **Dates**
9. Drudge Report, TMZ, Gawker and Perez Hilton are websites noted for: Sport; Environmental campaigning; Holiday bargains; or Exposing scandals? **Exposing scandals**
10. Name the payday loan company brand which the UK Church of England both denounced and funded in 2013? **Wonga**
11. Which one of these refers to a summary rather than a verbatim quote? Abstract, Excerpt, Extract? **Abstract**

12. What red fruit-juice-based drink whose name alludes to energy was first produced by John Noel Nichols in Manchester, 1908? **Vimto**
13. What colour/color traditionally are the Smurf cartoon characters? **Blue**
14. Which car manufacturer produced the models Giulietta, Berlina, Brera and Spider? **Alfa Romeo**
15. Which vastly shrunken, once ubiquitous brand urged users to 'Let your fingers do the walking'? **Yellow Pages**
16. What popular superhero is also the largest land-dwelling member of the Mustelidae (weasel) family? **Wolverine**
17. To whom is this quote famously misattributed: "If I'd asked people what they wanted, they would have said faster horses."? **Henry Ford**
18. What gambling game takes its name from French for toad, supposedly from players' hunched positions? **Craps**
19. What vegetable's thinner lighter variant has an established alternative name 'Tenderstem'? **Broccoli**
20. What chord is said punningly to be produced when dropping a piano down a mine-shaft? **A Flat Minor**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-165-general-knowledge/

आदरणीय संपादक जी,
नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का गतांक पढ़ने का अवसर मिला। यह अंक एडवैंचर विशेषांक था। यह तो मालूम था कि विभाग के द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए और उन में उत्साह, साहस आदि गुणों के विकास के लिए एडवैंचर गतिविधियों का आयोजित किया जाता है, लेकिन इन गतिविधियों में इतनी विविधता है, यह पत्रिका पढ़कर पता चला। यह हम सब के लिए गर्व का विषय है कि इन गतिविधियों के आयोजन में हमारा प्रदेश पूरे देश में सबसे आगे है और 2019-20 में प्रदेश को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित भी किया गया था। यह अंक संग्रह करने योग्य बन गया है। बधाई।

राजेश कुमार
प्राथमिक शिक्षक
राप्रा पाठशाला थुआ, खंड-अलेवा
जिला-जींद, हरियाणा

आदरणीय संपादक जी,
सप्रेम नमस्कार।

साहसिक व रोमांचक गतिविधियों पर केंद्रित 'शिक्षा सारथी' का अप्रैल अंक सचमुच ढेर सारी जानकारी से भरपूर था। संपादकीय -'बाधाएँ कब बाँध सकी हैं आगे बढ़ने वालों को' प्रेरणा देने वाला था। यह जानकर अच्छा लगा कि मुख्यमंत्री स्वयं इस बारे में रूचि लेकर प्रदेश के बालकों को विविध साहसिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर दे रहे हैं। डॉ.ओमप्रकाश कादयान के चित्रों ने पत्रिका की आभा में और भी निखार ला दिया है। डॉ.सुमन कादयान, रामकुमार, सुनील अरोरा और राधेश्याम भारतीय के लेख विशेष तौर पर पसंद आए। कुल मिलाकर एक संतुलित अंक के लिए पूरी संपादन मंडली को हार्दिक बधाई।

डॉ. सविता
पीजीटी इतिहास
राकवमा विद्यालय काहनौर
जिला-रोहतक, हरियाणा

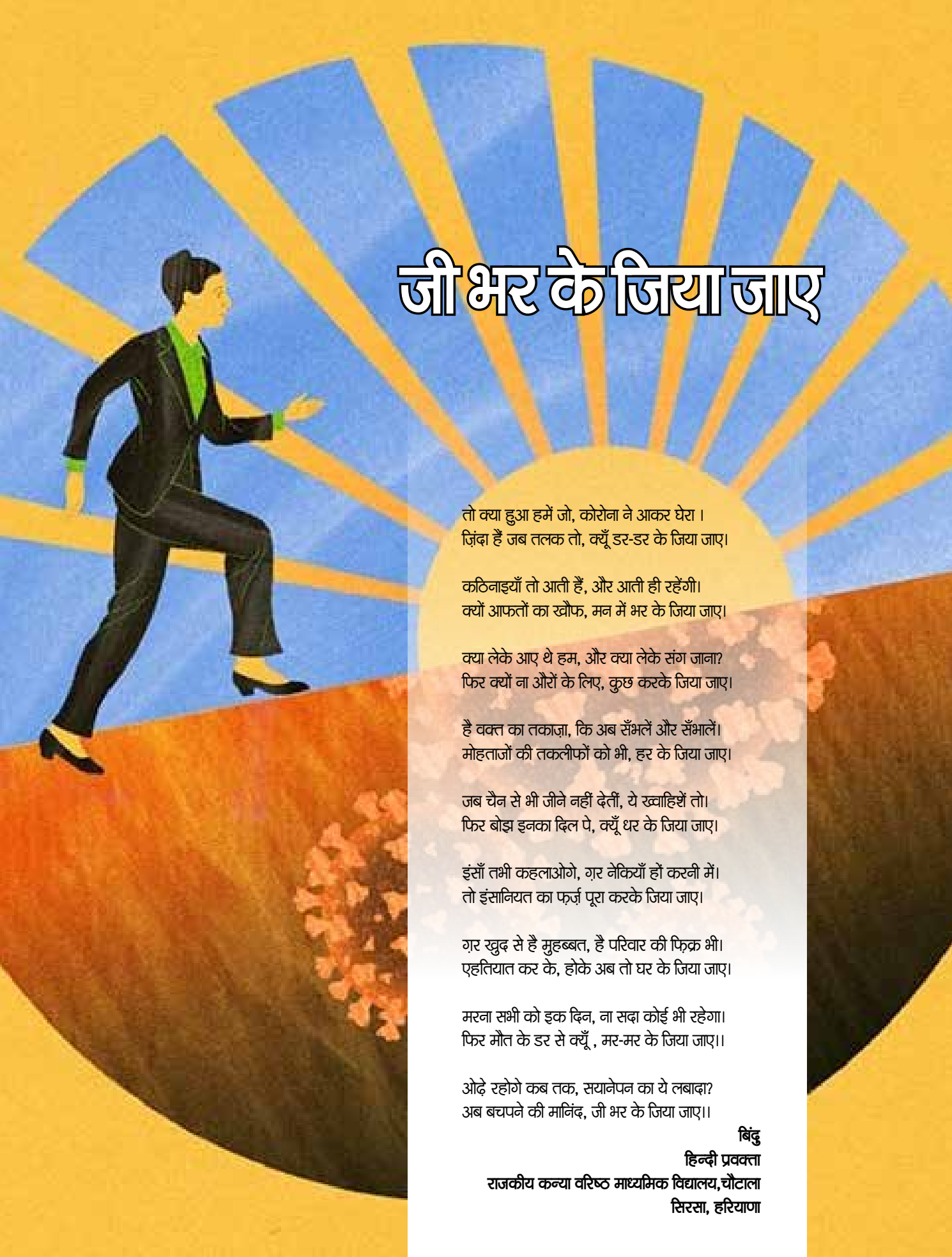

जी भर के जिया जाए

तो क्या हुआ हमें जो, कोरोना ने आकर घेरा ।
ज़िंदा हैं जब तलक तो, क्यूँ डर-डर के जिया जाए।

कठिनाइयाँ तो आती हैं, और आती ही रहेंगी।
क्यों आफतों का खौफ, मन में भर के जिया जाए।

क्या लेके आए थे हम, और क्या लेके संग जाना?
फिर क्यों ना औरों के लिए, कुछ करके जिया जाए।

है वक्त का तकाज़ा, कि अब सँभलें और सँभालें।
मोहताजों की तकलीफों को भी, हर के जिया जाए।

जब चैन से भी जीने नहीं देतीं, ये ख्वाहिशें तो।
फिर बोझ इनका दिल पे, क्यूँ धर के जिया जाए।

इंसाँ तभी कहलाओगे, ग़र नेकियाँ हों करनी में।
तो इंसानियत का फ़र्ज़ पूरा करके जिया जाए।

ग़र खुद से है मुहब्बत, है परिवार की फ़िक्र भी।
एहतियात कर के, होके अब तो घर के जिया जाए।

मरना सभी को इक दिन, ना सदा कोई भी रहेगा।
फिर मौत के डर से क्यूँ , मर-मर के जिया जाए।।

ओढ़े रहोगे कब तक, सयानेपन का ये लबादा?
अब बचपने की मानिंद, जी भर के जिया जाए।।

बिंदु
हिन्दी प्रवक्ता
राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय,चौटाला
सिरसा, हरियाणा

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/20-22

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

Help us to help you

नोवल कोरोनावायरस (COVID-19)

खुद रहें सुरक्षित, दूसरों को रखें सुरक्षित

क्या करें और क्या ना करें

क्या करें

- बार-बार हाथ धोएं। जब आपके हाथ स्पष्ट रूप से गंदे न हों, तब भी अपने हाथों को अल्कोहल - आधारित हैंड वॉश या साबुन और पानी से साफ करें
- छींकते और खांसते समय, अपना मुंह व नाक टिशू/रूमाल से ढकें
- प्रयोग के तुरंत बाद टिशू को किसी बंद डिब्बे में फेंक दें
- अगर आपको बुखार, खांसी और सांस लेने में कठिनाई है तो डॉक्टर से संपर्क करें। डॉक्टर से मिलने के दौरान अपने मुंह और नाक को ढंकने के लिए मास्क/कपड़े का प्रयोग करें
- अगर आप में कोरोना वायरस के लक्षण हैं, तो कृपया राज्य हेल्पलाइन नंबर या स्वास्थ्य मंत्रालय की 24X7 हेल्पलाइन नंबर 011-23978046 पर कॉल करें
- भीड़-भाड़ वाली जगहों पर जाने से बचें

क्या न करें

- यदि आपको खांसी और बुखार का अनुभव हो रहा हो, तो किसी के साथ संपर्क में ना आयें
- अपनी आंख, नाक या मुंह को ना छूयें
- सार्वजनिक स्थानों पर ना थूकें

हम सब साथ मिलकर कोरोनावायरस से लड़ सकते हैं

अधिक जानकारी के लिए
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के 24X7 हेल्पलाइन नं.
+91-11-2397 8046 पर कॉल करें या
ई-मेल करें ncov2019@gmail.com

mohfw.gov.in @MoHFWIndia @MoHFW_INDIA mohfwindia